@MahiSandesh MAHI SANDESH https://www.facebook.com/hindimagazinemahi/

साहित्यिक और सामाजिक मूल्यों की मासिक पत्रिका

R.N.I. No.
RAJHIN/2018/75539

ISSN : 2581-9208

माही संदेश

परखना मत,
परखने में कोई अपना
नहीं रहता
किसी भी आईने में
देर तक चेहरा नहीं रहता
कोई बादल हरे मौसम का
फिर ऐलान करता है
खिज़ा के बाग में जब
एक भी पत्ता नहीं रहता

बशीर बद्र

वर्ष : 2 अंक : 3 जून : 2019 पृष्ठ संख्या : 32 मूल्य : 35/-

बचपन संवार रहा ज़िंदगी

तो सरकार क्यों नहीं?

समाज को समर्पित समाजसेवी

स्नेह जीवन में बांटें तो जिंदगी मुस्कराएगी

महज नौ वर्ष की उम्र में सिर से पिता का साया उठ गया, पिता स्व. केप्टन महाराज बिहारी माथुर, रेलवे पुलिस फोर्स में नौकरी करते थे जब उन्नीस वर्ष के हुए तो मां प्रेमा माथुर भी भगवान को प्यारी हो गईं, बचपन में अपने मामा स्वर्गीय रघु सिन्हा के लालन-पालन में जीवन को आगे बढ़ाया, जिन्होंने मां-बाप से बढ़कर इन्हें अपना समय व स्नेह भरा आशीष दिया। सुधीर माथुर आज एक ऐसी शख्सियत हैं जो समाज के असहाय लोगों के लिए प्रयत्नशील हैं, सुधीर माथुर न केवल जयपुर में बल्कि कश्मीर तक भी समाज सेवा की अलख जगा रहे हैं। माही संदेश राष्ट्रीय पत्रिका के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन की समाजसेवी सुधीर माथुर से विशेष बातचीत...

सुधीर माथुर

सुधीर माथुर का जन्म 19 जून, 1958 को गोविंद की नगरी जयपुर में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा सेंट जेवियर से हुई इसके बाद राजस्थान महाविद्यालय से अर्थशास्त्र में ऑनर्स किया। पढ़ाई के बाद जब बारी नौकरी करने की आई तो सुधीर ने आईटीसी कंपनी को चुना, वर्ष 1982 में आईटीसी में नौकरी करते हुए ही एमबीए किया, राजस्थान के अलावा हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड आदि राज्यों में काम करते हुए सफलता दर सफलता कई मुकाम हासिल किए और वर्ष 2018 में आईटीसी से ही सेवानिवृत्त हुए।

काम से मिली पहचान

चाहे आप नौकरी कर रहे हैं या खुद का व्यवसाय, जब तक आप पूर्ण समर्पित भाव से काम नहीं करेंगे आपकी पहचान नहीं बनेगी, इस बात का अनुसरण करने वाले सुधीर माथुर का जीवन लोगों के लिए प्रेरणा है, सारी जिंदगी एक कंपनी में काम किया और अपनी उल्लेखनीय पहचान बनाई। खास बात यह है कि नौकरी के दौरान भी समाज सेवा के काम से जुडे रहे। वर्तमान में नौकरी से सेवानिवृत्त होने के बाद अब असहाय और जरूरत मंद लोगों को बेहतर बनाने की ओर अग्रसर हैं। सैकड़ों सम्मान इन्हें अपने जीवनकाल में प्राप्त हो चुके हैं और निरंतर हो रहे हैं, जयपुर राजघराने की ओर से समाज सेवा में उत्कृष्ठ योगदान के लिए इन्हें 'राजा दूल्हे राय सम्मान 2016' प्रदान किया गया।

पालतू डॉग्स से बेहद लगाव

जैसे ही हमने देश के मशहूर चित्रकार चन्द्रप्रकाश गुप्ता के साथ समाजसेवी सुधीर माथुर के घर में प्रवेश किया तो पालतू डॉग्स ने बेहद मिलनसार भाव से हमारा स्वागत किया, आज जानवर वो भाषा समझ रहे हैं जो इंसान भूलता जा रहा है, समाजसेवी सुधीर माथुर के लगाव व स्नेह भरी देखभाल के कारण ही तीनों फीमेल श्वान पोली, लीजा व लैला, इंसान से भी बढ़कर व्यवहार कर रहे हैं, अगर एक इंसान जानवरों में इस तरह के गुण विकसित कर सकता है तो यकीनन वह समाज में बड़ा बदलाव लाने में सक्षम है। ...शेष पृष्ठ 31 पर

माही संदेश (राष्ट्रीय पत्रिका)

संस्थापक	डॉ. मदनलाल शर्मा*
प्रधान संपादक	रोहित कृष्ण नंदन (98874-09303)
प्रबंध निदेशक	डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा*
सह-संपादक	डॉ. महेश चन्द* नित्या शुक्ला* मधु गुप्ता* वंदना शर्मा* नीरा जैन*
आईटी सलाहकार	सोनू श्रीवास्तव*
ब्यूरो चीफ (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र)	रमन सैनी* 9717039404
संवाददाता	ईशा चौधरी* दीपक कृष्ण नंदन* श्री राम शर्मा* विनोद चौधरी*
अकादमिक सलाहकार	डॉ. सुधीर सोनी*
बिजनेस हैड	अनुराग सोनी* 9828198745
मार्केटिंग सलाहकार	अनिल कुमार शर्मा*
मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव	रिंकी सैनी* अजय शर्मा (8368443640)

परामर्श समिति

डॉ. गीता कौशिक*	बालकृष्ण शर्मा*
डॉ. रश्मि शर्मा*	डॉ. मीना शर्मा*
डॉ. नीति मिश्रा*	प्रकाश चन्द शर्मा*

संरक्षक मंडल	रामेश्वरी देवी*
डिजाइनिंग	सागर कम्प्यूटर 79765-17072
मुद्रण	कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स 9024765603

पृष्ठ संख्या : 32 आवरण सहित
प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह की 01 तारीख

: कार्यालय :

50-51 ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

ई-मेल :

mahisandesh31@gmail.com

मोबाइल : 9887409303

पत्रिका में प्रकाशित आलेख-रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

नाम के आगे अंकित (*) चिह्न अवैतनिक है।

बच्चों ने बड़ा सवाल किया है मोदी जी सोचिएगा जरूर?

रोहित कृष्ण नंदन
प्रधान संपादक
माही संदेश
mahisandesheditor@yahoo.com

देश ने फिर नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री के रूप में चुना है, सरकार को स्पष्ट जनादेश मिला है, अब जनता सरकार से वो काम चाहती है जिसके लिए जनमत ने नई सरकार का चयन किया है। सवाल सरकार से है क्या बच्चों को उचित शिक्षा मिलेगी, क्या भूखे बच्चों को खाना मिलेगा, क्या निर्वस्त्र बच्चों को कपड़ा मिलेगा, क्या अनाथ बच्चों को आसरा मिलेगा, आप बच्चों की समस्या का निराकरण करना शुरू कर देंगे तो यकीन मानिए बड़ों की समस्या स्वतः ही हल हो जाएगी, एक पिता बच्चों के लिए दिन रात एक करता है तब जाकर दो वक्त की रोटी का जुगाड़ हो पाता है, माही संदेश के आवरण चित्र पर बच्चे की लगन व मुस्कान संदेश दे रही है कि जीवन देना कितना समर्पण मांगता है, आप स्वयं को जनसेवक कहते हैं, जन सेवक की तरह हर सांसद, हर विधायक यदि काम करे तो दावे के साथ कह सकता हूं राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश क्या संपूर्ण हिंदुस्तान मुस्करा उठेगा, जिस दिन नेता घर भरने की बजाय जन-जन का उदर भरने की ओर रुख कर देंगे हिंदुस्तान के लिए वो दिन उत्सव होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर जो भरोसा देश की जनता ने दिखाया है, वो भरोसा आज देश का हर बच्चा, देश की हर बेटी, देश का हर नागरिक चाहता है। सरकार बनते ही अक्सर नेता अहम और वहम में पड़ जाते हैं। ये उम्मीदें बहुत कुछ चाहती हैं देश के जनसेवक से, कई बार नहीं बार-बार, आप जनसेवक शब्द से स्वयं को संबोधित करते आए हैं मोदी जी, आपको जनसेवक का अर्थ अब हिंदुस्तान को बताना है, देश यही चाहता है, ये जनादेश आपको देश की अगली पीढ़ी ने दिया है, अधिकांश ने पहली बार वोट डाले थे, बच्चों के सवाल आपसे अब कई बार जवाब मांगेंगे, शेष फिर...

एक नजर यहां भी

सफलता संदेश		5
युवा संदेश		
मेहनत और लगन से हासिल होती मंजिल	**रोहित कृष्ण नंदन**	7
नारी संदेश		
बाइक राइडिंग से सड़क सुरक्षा के प्रति बढ़ाती रहूंगी जागरूकता	**रोहित कृष्ण नंदन**	9
पर्यावरण विशेष		
यजुर्वेद और पर्यावरण	**नीरज कृष्ण**	11
हिमालय में ग्लेशियर के पिघलने से जुड़े खतरे	**ललित गर्ग**	12
जन संदेश		
सरकार से उम्मीदें		14
विशेष		
जल संरक्षण राजस्थान की परम्परा	**डॉ. स्वप्निल यादव**	16
कथा संदेश		
चुन्नू की सोच	**ज्ञानेन्द्र मोहन खरे**	18
काव्य कलम		19
उपन्यास संदेश		
उड़ती चील का अण्डा	**डॉ. मदन लाल शर्मा**	22
आयोजन		23
पुस्तक संदेश		
मुसाफिरनामा	**डॉ. संस्कृति शर्मा**	25
अनुभवों की गाथा है 'अनुभूति'	**जालाराम चौधरी**	26
सिनेमा संदेश		
'मेरी लॉटरी लग जाने वाली है' राजिंदर नाथ	**शिशिर कृष्ण शर्मा**	27

आवरण चित्र - वीनू मित्तल*

गुरुग्राम में जन्मी व वर्तमान में जयपुर निवासी वीनू बचपन से ही फोटोग्राफी का शौक रखती हैं और दुनिया को 'अपने ही अंदाज़ में अपने लेन्स से कैद' करने के सपने को पूरा करने का प्रयास कर रही हैं।

माही संदेश

हिन्दी पत्रिका के सदस्य बनें

: कार्यालय :

माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर (राजस्थान)।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : ₹ 400
पंचवर्षीय : ₹ 2000
आजीवन : ₹ 5000

चेक **'Mahi sandesh'** (माही संदेश) के नाम से देय एवं रेखांकित होना चाहिए। रजिस्टर्ड डाक से प्रति मंगवाने पर (प्रति वर्ष 250/- रुपए) अतिरिक्त देय डाक खर्च शुल्क भेजें।

भवदीय,
'रोहित कृष्ण नंदन'
संपादक : 'माही सन्देश'
खाता संख्या : 37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखाः कनक विहार, हीरापुरा, अजमेर रोड, जयपुर
पेटीएम-9887409303

विज्ञापन

ऐसे उम्मीदवार जो अपना उत्तम कला कौशल रखते हों मगर आगे बढ़ने का मुकाम नहीं मिला, सभी से साग्रह निवेदन और आमंत्रण है कि अपनी हस्तलिखित या टंकित प्रोफाइल ई-मेल करें और आपको ग्रूम-अप करने का एक अवसर हमें अवश्य दें ।

मेरा अनुभव और संपर्क निश्चित रूप से आपके हित में वृद्धि करने के साथ-साथ जीवन की असलियत से भी रूबरू कराकर आज के मायने बेहतर और कमाऊ बनने में मददगार होगा।

royalensign105@gmail.com
or fix an appointment calling me on 7877756814

CBSE 10th

नाम : **भाव्या गोयल**
प्रतिशत : 97
विद्यालय : कैम्ब्रिज कोर्ट मानसरोवर

सफलता को सलाम

परीक्षा में सफल हुए सभी छात्रों को माही संदेश परिवार व चित्रा स्टडी पॉइन्ट की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं... आप जीवन की हर परीक्षा में यूं ही सफल होते रहें...

शिक्षा एक ऐसा धन है जिसे कोई चोर चुरा नहीं सकता और न ही कोई छीन सकता है।

आचार्य चाणक्य

नाम : **मेध्या जैन**
प्रतिशत : 91.4
विद्यालय : सेंट ऐंसलम स्कूल, जयपुर

नाम : **लावन्या प्रकाश**
प्रतिशत : 91.8
विद्यालय : सेंट ऐंसलम स्कूल, जयपुर

नाम : **प्रसुक बैद**
प्रतिशत : 93.3
विद्यालय : महावीर पब्लिक स्कूल

नाम : **रौनक जैन**
प्रतिशत : 96
विद्यालय : कैम्ब्रिज कोर्ट मानसरोवर

नाम : **अमन जैन**
प्रतिशत : 91.2
विद्यालय : बीवीबी विद्याश्रम

नाम : **जिज्ञासा गंगवाल**
प्रतिशत : 92.4
विद्यालय : सेंट जेवियर स्कूल

नाम : **अमृता नायर**
प्रतिशत : 94.2
विद्यालय : सेंट ऐंसलम स्कूल, जयपुर

नाम : **निशिता शर्मा**
प्रतिशत : 92.4
विद्यालय : सेंट ऐंसलम स्कूल, जयपुर

नाम : **मोहित शर्मा**
प्रतिशत : 92.4
विद्यालय : केन्द्रीय विद्यालय नं5

नाम : **फाल्गुनी शर्मा**
प्रतिशत : 92.6
विद्यालय : सेंट एंसलम स्कूल जयपुर

नाम : **हर्ष दीक्षित**
प्रतिशत : 88.8
विद्यालय : आकाशदीप पब्लिक स्कूल

नाम : **रितिका चंदानी**
प्रतिशत : 93.2
विद्यालय : इंडिया इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर

नाम : **निखिल सभरवाल**
प्रतिशत : 95.4
विद्यालय : दिल्ली पब्लिक स्कूल, आगरा

नाम : **राघव सोनी**
प्रतिशत : 93.8
विद्यालय : सेंट पॉल्स स्कूल, कोटा

नाम : **प्रतिष्ठा शर्मा**
प्रतिशत : 90
विद्यालय : केन्द्रीय विद्यालय, दिल्ली

नाम : **प्रज्ञा गौड़**
प्रतिशत : 92
विद्यालय : सेंट पॉल्स चर्च कॉलेज, आगरा

नाम : **रिद्धि सोनी**
प्रतिशत : 93.8
विद्यालय : माहेश्वरी गर्ल्स स्कूल, जयपुर

नाम : **अमनदीप सिंह**
प्रतिशत : 94.4
विद्यालय : महाराजा सवाई मान सिंह स्कूल

लोग तुम्हारी स्तुति करें या निन्दा,
लक्ष्मी तुम्हारे ऊपर कृपालु हो या न हो,
तुम्हारा देहान्त आज हो या एक युग में,
तुम न्याय पथ से कभी भ्रष्ट न हों।

स्वामी विवेकानन्द

पिता के लिए चिट्ठी

मन की बात

पूज्य पिताजी

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आपकी बेटी ने जो जो चाहा उसे मिल गया। आज वह असि. प्रोफेसर के पद पर है। निरंतर उन्नति के सोपानों पर चढ़ती जा रही है। सब कुछ मिला फिर भी एक रिक्तता है, जो कभी नहीं भर सकती। आपने उंगली पकड़कर लिखना सिखाया, आज भी लेखन का शौक बरकरार है, अधिकांश विषयों पर लिख लेते हैं पर बात जब पिता की हो तो शब्द कम पड़ जाते हैं। इतना कुछ आपसे मिला पर जब सोचा कि अपनी खुशियां आपसे बांटें तब तक आप इतनी दूर चले गए कि वहां तक हमारी पहुंच ही नहीं, ऐसा कोई डाकिया ही नहीं जो यह खत आप तक पहुंचा दे। कितना कुछ है आपको बताने को पर काश आप यह पढ़ पाते। ये निगाहें हर एक में आपको ढूंढती है पर आप कहीं नजर नहीं आते। एकांत में आंसू बहाकर दर्द हल्का कर लेते हैं।

फादर्स डे पर आपके आर्शीवचन बेटा खुश रहो कि इंतजार में...

आपकी बेटी
डॉ. निशीथ गौड़

मेहनत और लगन से हासिल होती मंजिल

संघर्ष के द्वार से ही सफलता का रास्ता जाता है और जब यह रास्ता लंबा लगे तो यकीनन सफलता भी उतनी ही बेहतरीन होगी, कुलदीप यूं ही सफलता के पथ पर अग्रसर रहें...

हम आपको रुबरु करा रहे हैं विपरीत परिस्थितियों में भी हार न मानने वाले, बेहद कम संसाधनों के बीच अपने हुनर अपने विवेक से अपनी पहचान बना रहे एक ऐसे युवा से कि जिसके सपने देश के लिए कुछ कर गुजरने के हैं, वो चाहता है अपने मां-बाप अपने देश का नाम रौशन करना, उम्र महज 21 वर्ष है सपना है भारतीय प्रशासनिक सेवा पास कर कलक्टर बनना, माही संदेश के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन की, कुलदीप सिंह राठौड़ से विशेष बातचीत...

कुलदीप का संघर्ष पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा है कि एक छोटे से गांव का लड़का और चौकीदारी का काम करने वाले पिता का बेटा जब सफलता की ओर अग्रसर हो सकता है तो आज का वो युवा जो साधन संपन्न है वो क्यों नहीं?

जब कदम बढ़े

राजस्थान के नागौर जिले के सथाना कलां गांव की भौमिया की ढाणी में रहने वाले कुलदीप सिंह राठौड़ बचपन से ही मेधावी प्रवृत्ति के छात्र रहे हैं। आठवीं कक्षा तक की पढ़ाई अपने गांव से ही करने वाले कुलदीप ने एसएसजैन सुबोध स्कूल जयपुर से 9वीं कक्षा में प्रवेश लिया इसके बाद आगे की पढ़ाई आरंभ की और राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज झालावाड़ से बीटेक की डिग्री कप्लीट की व मैकेनिकल बीटैक परिणाम में प्रथम स्थान भी हासिल किया।

संघर्ष के साथ मिल रही सफलता

परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत नहीं है लेकिन कुलदीप के पिता ने कभी भी इस आर्थिक स्थिति की बाधा को इनकी पढ़ाई के बीच नहीं आने दिया। कुलदीप के पिता हनुमान सिंह राठौड़ जयपुर में ही साड़ी की दुकान पर चौकीदारी का काम करते हैं, राठौड़ की माता भी खेती बाड़ी के साथ-साथ सिलाई का भी काम करती हैं ताकि बेटे व बेटियों के विकास की यात्रा में कोई कमी नहीं आए। कुलदीप ने तकरीबन 100 से अधिक प्रमाण पत्र विभिन्न प्रतियोगिताओं में

हासिल किए हैं। वर्ष 2010 में कराटे प्रतियोगिता में नेशनल में गोल्ड मेडल प्राप्त किया है, अपने साथ यह अपनी दोनों बहिनों को भी पढ़ाई के लिए उत्साहित करते रहते हैं, कुलदीप से छोटी बहिन ममता कंवर ने बीए की पढ़ाई कम्पलीट की है तथा दूसरी छोटी बहिन निया कंवर ने 12 की पढ़ाई पूर्ण की है।

कुलदीप की मां एवं बहन

कुलदीप के पिता

कलक्टर बने प्रेरणा

कुलदीप कहते हैं कि तत्कालीन झालवाड़ कलक्टर जितेन्द्र सोनी का काम करना मन को भा गया, सिविल सर्विस के जरिए आप समाज के लिए अपना भरपूर योगदान दे सकते हैं, तभी से लगा कि हां कलक्टर बनना है।

मलेशिया में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे कुलदीप

हाल ही कुलदीप का चयन एशिया यूथ इंटरनेशनल मॉडल यूनाइटेड नेशंस के लिए 10 सदस्यीय टीम में हुआ है, मलेशिया के कुआलालम्पुर में अगस्त माह में आयोजित होने वाली इस प्रतियोगिता में कुलदीप भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे। यहां यह ऐसा मंच है जिसमें नेतृत्व, बातचीत और कूटनीति में युवा मानसिकता विकसित की जाएगी। मॉडल संयुक्त राष्ट्र का लक्ष्य दुनिया भर के युवा नेताओं को शामिल करना है और वैश्विक दुनिया में मानव सुरक्षा एजेंडा विषय के साथ विचारों को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करना है।

मित्र कर रहे सहयोग

कुलदीप बताते हैं कि मित्रों ने केवल इनका हौसला बढ़ाया बल्कि पढ़ाई में भी मदद की, मित्रों के नाम भागचंद गुर्जर, सांवरमल सैनी, प्रभात मीणा, अभिषेक ताड़ा, खेमराज पूनिया, रोहित सैनी, संगम सिंह, नीरज भाटी, उत्कृष्ठ सिंह, प्रहलाद धाकड़, राहुल गौर, अंकित भारद्वाज। इनके साथ-साथ प्राचार्य करतार सिंह, अदिति मैम, निधि भटनागर मैडम, अंकित सर, मनोज मित्तल सर सहित सभी शिक्षकों का विशेष योगदान है।

कॉलेज से समाज सेवा सीखी

कुलदीप बताते हैं कि राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय झालावाड़ में में कई कार्य कॉलेज प्रशासन,शिक्षकों व साथियों की मदद से पूर्ण हुए जैसे फुटबॉल ग्राउंड का निर्माण, इसके साथ-साथ कॉलेज की ही एक इमारत को छात्र गतिविधि सेंटर के रूप में भी परिवर्तित किया गया। जिसमें छात्र कल्चरल एक्टिविटीज के साथ-साथ समस्त शैक्षणिक गतिविधियों में शिरकत करते हैं। यहां इंडोर गेम्स खेलने की सुविधा का भी निर्माण किया गया।

बाइक राइडिंग से सड़क सुरक्षा के प्रति बढ़ाती रहूंगी जागरूकता

*जिन्हें समाज के लिए कुछ कर गुजरना होता है वो लोग विरले ही होते हैं, पूजा यादव एक ऐसी शख्सियत हैं जो एक महिला बाइक राइडर हैं और लोगों को सड़क सुरक्षा के लिए जागरूक बना रही हैं। पूजा अब तक 50,000 से अधिक किलोमीटर तक राइडिंग कर चुकी हैं और यह यात्रा बदस्तूर जारी है। **पूजा यादव** से माही संदेश के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन की विशेष बातचीत...*

पूजा ताज रॉयल्स आगरा और ब्रज बोर्न राइडर्स मथुरा क्लब के साथ-साथ सड़क सुरक्षा के लिए काम कर रहे ट्रेक्स नामक एनजीओ से जुड़ी हुई हैं।

हाथरस, उत्तर प्रदेश में जन्मी पूजा यादव बृज भूमि मथुरा में रह रहीं हैं क्या आप यह कल्पना कर सकते हैं जिस महिला को यमुना नदी के पुल से गुजरने में डर लगता है क्या वह अकेले 55000 किलोमीटर अकेले बाइक राइडिंग का सफर कर सकती है, इस सफर में न जाने कितने के मन में बचपन से ही समाज के लिए कुछ अलग करने की चाह थी, जब कॉलेज में प्रवेश लिया तो सपने बड़े होने लगे जब किसी चीज को पाने की चाह प्रबल हो तो सपने स्वत: ही पूर्ण होने की दिशा में अग्रसर होते हैं। पूजा ने बातचीत के दौरान बताया कि हमेशा मन में रहता था कि बिल्कुल अलग बनना है मेरा मानना है कि लड़कियां डॉन टाइप होनी चाहिए। जिंदगी में बड़ा बदलाव शादी के बाद आया जब पति ब्रजेश कुमार यादव ने हर कदम पर न केवल साथ दिया बल्कि हर सपना सच करने में अपना अहम योगदान दिया। पति को शुरुआती दिनों से बाइक राइड करने का बहुत शौक है कई बार वे मुझे अपने साथ भी लेकर गए, लंबी दूरी की यात्राएं कई बार कीं, फिर पति ने वर्ष 2015 में बाइक सिखाई और जब बाइक सीखी तो लगा कि मेहनत से जिंदगी को वाकई में बहुत कामयाब बनाया जा सकता है। महिला होने के नाते बाइक राइडिंग की प्रेरणा आगरा की ही रहने वाली पल्लवी फौजदार से मिली जो कि अब दिल्ली रह रहीं हैं। आज जो बाइक राइडिंग इतनी आसानी से कर पा रही हूं तो इसका सारा श्रेय पतिदेव को जाता है साथ ही मेरा बेटा अनिरुद्ध यादव जिसने बेहद कम उम्र से ही मुझे सहयोग किया क्योंकि 12 वर्ष के बच्चे को यूं अकेले छोड़कर राइड पर निकल जाना आसान नहीं होता।

जीवन का मकसद समाज सेवा

पल्लवी काफी समय से सोलो बाइक राइडिंग कर रही हैं। पूजा आगे कहती हैं कि वर्ष 2015 से लेकर वर्तमान में मैं जमकर बाइक राइडिंग का आनंद ले रही हूं साथ ही बाइक राइडिंग के साथ समाज सेवा के कार्यों को भी जोड़ा है, वर्ष 2015 में वोट फॉर इंडिया में तत्कालीन धौलपुर कलेक्टर के साथ मिलकर लोगों को जागरूक किया, समाज सेवा की इस कड़ी में ट्रेक्स एनजीओ के साथ जुड़ी हुई हूं, इस एनजीओ के डायरेक्टर अनुराग ठाकुर हैं तथा जनरल सेकेट्री रजनी गांधी हैं जो कि तन-मन-धन से समाज सेवा के इस कार्य में जुटे हुए हैं। ट्रेक्स एनजीओ रोड सेफ्टी के लिए काम करता है और मैं बाइक राइडिंग के दौरान हेलमेट पहनना और सड़क सुरक्षा के नियमों की जानकारी लोगों को देना जैसे कार्य करती हूं।

अपने जीवन की पहली लंबी बाइक राइडिंग का मौका मुझे ट्रेक्स एनजीओ के तहत मिला जिसकी शुरुआत 18 नंवबर 2018 में नोएडा से की गई, इस राइड के फ्लैग ऑफ के दौरान पुलिस व प्रशासन व एनजीओ के आला अधिकारी मौजूद थे। 34 दिन की इस बाइक राइडिंग में देश के तकरीबन 16 राज्य कवर किए। इस 34 दिन के इस सफर में फैमिली और एनजीओ का काफी सहयोग रहा। जब प्रतिदिन सफर पर निकलती तो लोकेशन शेयर करती और जब तक अगली लोकेशन पर पहुंचती तब तक फैमिली व एनजीओ लोकेशन ट्रेस करती रहती। मेरी मां सरला यादव के साथ-साथ मेरे पिता नंदन यादव शुरुआती दिनों में मेरी यात्राओं को लेकर बड़े चिंतित रहते थे लेकिन अब वो बड़े गर्व के साथ मेरा हौसला बढ़ाते हैं। पूजा को संगीत सुनने साथ-साथ कविताएं सुनना तथा नई नई जगह घूमना बेहद पसंद है।

बस बढ़ते जाना है

पूजा ने बताया कि यूं तो अभी कई काम करने हैं लेकिन वर्ष 2020 तक जो मेरा ड्रीम बाइक राइड करके सियाचिन बेस कैंप पर जाना है वो पूरा करना है साथ ही जनवरी 2020 में ही बाइक से ही थाइलैंड जाने की योजना पर काम जारी है, अब बस जीवन का यही उद्देश्य है कि समाज को रोड सेफ्टी विषय पर जागरूक करते रहना है क्योंकि अधिकतर सड़क दुर्घटनाएं नियमों के पालन करने के अभाव में होती हैं साथ ही विभिन्न प्रकार की सामाजिक गतिविधियों में लड़कियों को आगे बढ़ाना व उन्हें प्रोत्साहित करना।

यजुर्वेद और पर्यावरण

नीरज कृष्ण
पटना, बिहार

मानव एवं पर्यावरण के मध्य अटूट सम्बन्ध पुरातन काल से है। पर्यावरण के साथ यह सम्बन्ध जीवन मूल्यों पर आधारित रहा है। मानव में प्रकृति के प्रति अनुराग इतना अधिक है कि उससे अलग अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती और इसी भावात्मक जुड़ाव का वर्णन वेदों में वर्णित है।

वैज्ञानिक महत्व

वेदों के वर्णन इस बात की ओर इंगित करते हैं कि हमारे मनीषियों ने समूची प्रकृति को देवतुल्य मानकर उसकी रक्षा हेतु विभिन्न विधान रचे। ऋषियों ने प्राकृतिक सन्तुलन को बनाये रखने को जनसामान्य की धार्मिक आवश्यकता बताया। वस्तुत: धर्म से जोड़ने के पीछे कितने ही सूक्ष्म रहस्य, सूक्ष्म तत्त्व छिपे हैं, जिनका वैज्ञानिक महत्व यजुर्वेद के मन्त्रों से स्पष्ट है। हमारे मनीषियों ने पर्यावरण शुद्धिकरण के लिये शान्ति मन्त्रों से स्तवन किया है।

द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष: शान्ति: पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति:। वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म शान्ति: सर्व: शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सा मा शान्तिरेधि ॥ (यजु. 36।17)।

भाव यह है कि हमारे लिये आकाश, अन्तरिक्ष, पृथ्वी, जल, औषधियाँ, वनस्पतियाँ, विश्वेदेव तथा ब्रह्मा सभी शान्ति प्रदान करने वाले हों। चारों ओर शान्ति हो।

इस शान्तिपाठ में पर्यावरण सन्तुलन को बनाये रखने हेतु ऋषियों द्वारा प्रार्थना

की गयी है, जिससे स्पष्ट होता है कि वैदिक ऋषि पर्यावरण के प्रत्येक रूप की रक्षा एवं संतुलन के प्रति कितने सजग थे। उन्होंने जनसामान्य में श्रद्धाभाव जागृत कर प्रकृति के सभी रूपों को अशान्त अर्थात् आज के परिप्रेक्ष्य में प्रदूषित न करने की प्रेरणा दी।

यजुर्वेद में अन्तरिक्ष (वायुमण्डल) - के पवित्र रहने की भी कामना की गयी है । मृदा संरक्षण की एक प्रार्थना में यह गया है - मृदा को उर्वर बनायें तथा उसके प्रति हिंसा (प्रदूषण) न करें।

एक मंत्र में ऋषिओं ने बादलों से कामना की है कि वे हमारे लिये सुखकारी हैं। 'शं योरभि स्रवन्तु न:' (36/12)

यजुर्वेद में पेड़-पौधों और पशुओं को रक्षा करने की शिक्षा दी गयी तथा उनको हानि न पहुंचाने का उल्लेख मिलता है। वृक्षों के संरक्षण के तात्पर्य कहा गया है 'स्वर्धिते मैन: हिंसी:'(41) अर्थात् वृक्ष को कुल्हाड़ी से मत काटो।

यजुर्वेद में औषधियों को अच्छा मित्र बताकर उनके फलने-फूलने की कामना की गयी है ताकि वातावरण शुद्ध हो तथा प्राणी निरोगी हों।

यजुर्वेद में मानव को निर्देश दिया गया है कि वे पशुओं को निर्भय होकर रहने दें। उनके साथ हिंसक व्यवहार न करें। यजुर्वेद में ऋषियों ने पर्यावरण के सभी घटकों को रक्षा के साथ ही यज्ञ के महत्ता को भी प्रतिपादित किया है तथा प्राकृतिक सन्तुलन बनाये रखने लिये मानव को प्रेरित किया है।

यजुर्वेद के प्रथम अध्याय में प्राकृतिक संतुलन को बनाये रखने में यज्ञ के महत्त्व का वर्णन किया गया है। यज्ञ की महत्ता बताते हुए यजुर्वेद में कहा गया है कि हे यज्ञ! तुम सुखकारक तथा आश्रय के योग्य हो। तुमसे रोग नष्ट होते हैं तथा उनके कीटाणु भी ध्वस्त होते हैं। तुम पृथ्वी के लिये त्वचा की तरह रक्षक हो। तुम हरीतिमा से पूर्ण वनस्पतियों से आच्छादित पर्वत के समान सुन्दर, सुहावने तथा हितकारी हो। तुम इस विस्तृत आकाश में जल से भरे वर्षा वाले बादलों के समान हो।

हमारे ऋषियों ने अपनी प्रखर एवं पैनी दृष्टि से पर्यावरण-परिष्करण के लिये यज्ञ- जैसी उत्तम प्रक्रिया का अन्वेषण कर लिया था। शुक्लयजुर्वेद के प्रथम अध्याय में बताया गया है कि अग्नि को आहुतियाँ अर्पित करने का नाम ही यज्ञ नहीं है अपितु यज्ञ एक भावना है, जो समस्त पर्यावरण को सुवासित करती है।

इस तरह यजुर्वेद में उल्लेख मिलते हैं कि प्राचीन ऋषि-मुनियों की दूरदृष्टि तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने न केवल पर्यावरण-रक्षा की शिक्षा दी, अपितु सम्पूर्ण पर्यावरण को संतुलित रखा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यजुर्वेद के वर्णन आज के परिप्रेक्ष्य में विशेष उपयोगी हैं। आज जबकि प्रदूषण सम्पूर्ण प्रकृति में व्याप्त हो रहा है, तब वेद की शिक्षाओं को अपनाना परम आवश्यक है ताकि इस धरा को पुन: उज्ज्वल बनाया जा सके।

हिमालय में ग्लेशियर के पिघलने से जुड़े खतरे

ललित गर्ग
दिल्ली

वर्तमान समय में पर्यावरण के समक्ष तरह-तरह की चुनौतियां गंभीर चिन्ता का विषय बनी हुई हैं। ग्लोबल वॉर्मिंग की वजह से ग्लेशियर तेजी से पिघल कर समुद्र का जलस्तर तीव्र गति से बड़ा रहे हैं। जिससे समुद्र किनारे बसे अनेक नगरों एवं महानगरों के डूबने का खतरा मंडराने लगा है। हिमालय में ग्लेशियर का पिघलना कोई नई बात नहीं है। सदियों से ग्लेशियर पिघलकर नदियों के रूप में लोगों को जीवन देते रहे हैं। लेकिन पिछले दो-तीन दशकों में पर्यावरण के बढ़ रहे दुष्परिणामों के कारण इनके पिघलने की गति में जो तेजी आई है, वह चिंताजनक है।

ग्लोबल वार्मिंग का खतरनाक प्रभाव अब साफतौर पर दिखने लगा है। देखा जा सकता है कि गर्मियां आग उगलने लगी हैं और सर्दियों में गर्मी का अहसास होने लगा है। इसकी वजह से ग्लेशियर तेजी से पिघल कर समुद्र का जलस्तर तीव्रगति से बड़ा रहे हैं। ऐसे में मुंबई समेत दुनिया के कई हिस्सों एवं महानगरों-नगरों के डूबने की आशंका तेजी से बढ़ चुकी है। इसका खुलासा

एक ताजा अध्ययन में 466 ग्लेशियरों के आंकड़ें जमा किए हैं, जिनसे पता चलता है कि 1962 से 2001 तक इनका आकार बीस फीसदी तक कम हुआ है। कई बड़े ग्लेशियर छोटे टुकडों में टूट गए हैं और सब तेजी से पिघल रहे हैं।

अमरीकन नेशनल अकादमी ऑफ साइंस ने किया है। उन्होंने अपने अध्ययन में दुनिया के 7 शहरों पर ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण पड़ने वाले प्रभाव के बारे में विस्तार से बताया है। अकादमी ने तापमान में दो और चार डिग्री बढ़त के आधार पर अपना निष्कर्ष जारी किया है और दावा किया गया है कि तापमान के दो डिग्री बढ़ने पर गेटवे ऑफ इंडिया चारों तरफ से पानी से जलमग्न हो जाएगा। इसका यदि तापमान 4 डिग्री बढ़ा तो मुंबई अरब सागर में समा जाएगी।

पर्यावरण के निरंतर बदलते स्वरूप ने नि:संदेह बढ़ते दुष्परिणामों पर सोचने पर मजबूर किया है। औद्योगिक गैसों के लगातार बढ़ते उत्सर्जन और वन आवरण में तेजी से हो रही कमी के कारण ओजोन गैस की परत का क्षरण

हो रहा है। इस अस्वाभाविक बदलाव का प्रभाव वैश्विक स्तर पर हो रहे जलवायु परिवर्तनों के रूप में दिखलाई पड़ता है। सार्वभौमिक तापमान में लगातार होती इस वृद्धि के कारण विश्व के ग्लेशियर तेजी से पिघलने लगे हैं। ग्लेशियर के तेजी से पिघलने के कारण महासागर में जलस्तर में ऐसी ही बढ़ोतरी होती रही तो महासागरों का बढ़ता हुआ क्षेत्रफल और जलस्तर एक दिन तटवर्ती स्थल, भागों और द्वीपों को जलमग्न कर देगा। ये स्थितियां भारत में हिमालय के ग्लेशियर के पिघलने से एक बड़े संकट का कारण बन रही है।

ग्लेशियर का पिघलना सदियों से जारी है, लेकिन पर्यावरण पर हो रहे विभिन्न हमलों के कारण इनका दायरा हर साल बढ़ रहा है। खूब बारिश और बर्फबारी से ग्लेशियर लगातार बर्फ से ढके रहते थे। मौसम ठंडा होने की वजह से ऊपरी इलाकों में बारिश की बजाय बर्फबारी होती थी। लेकिन 1930 के आते-आते मौसम बदला और बर्फबारी में कमी आने लगी। असर ग्लेशियर पर भी पढ़ा। ये बढ़ने की बजाय पहले स्थिर हुए, फिर पिघलते ग्लेशियरों का दायरा बढ़ने लगा। गंगोत्री ग्लेशियर पिछले दो दशक में हर साल पांच से बीस मीटर की गति से पिघल रहा है। उत्तराखंड के पांच अन्य प्रमुख ग्लेशियर सतोपंथ, मिलाम, नीति, नंदा देवी और चोराबाड़ी भी लगभग इसी गति से पिघल रहे हैं। भारतीय हिमालय में कुल 9,975 ग्लेशियर हैं। इनमें से 900 ग्लेशियर सिर्फ उत्तराखंड हिमालय में हैं। इन ग्लेशियरों से 150 से अधिक नदियां निकलती हैं, जो देश की 40 प्रतिशत आबादी को जीवन दे रही हैं। अब इसी बढ़ी आबादी के आगे संकट है। हाल के दिनों में हिमालयी राज्यों में जंगलों में आग की जो घटनाएं घटीं, वे ग्लेशियरों के लिए नया खतरा हैं। वनों में आग तो पहले भी लगती रही हैं, पर ऐसी भयानक आग काफी खतरनाक है। आग

के धुएं से ग्लेशियर के ऊपर जमी कच्ची बर्फ तेजी से पिघलने लगी हैं। इसके व्यापक दुष्परिणाम होंगे। काला धुआं कार्बन के रूप में ग्लेशियरों पर जम जाएगा, जो भविष्य में उस पर नई बर्फ को टिकने नहीं देगा।

पूरी दुनिया में ग्लेशियरों के पिघलने की घटनाओं पर व्यापक शोध एवं अनुसंधान हो रहे हैं, लेकिन भारतीय ग्लेशियरों के पिघलने की स्थितियों पर न अध्ययन हो रहा है, न ही उसको नियंत्रित करने के कोई उपाय होते हुए दिखाई दे रहे हैं। इन गंभीर होती स्थितियों पर काम करने वाले कुछ पर्यावरण संरक्षकों ने देश के लिए ग्लोबल वार्मिंग के खतरों के संकेत देने शुरू कर दिए हैं। साथ ही यह सवाल भी खड़ा किया है कि भारत इसका मुकाबला कैसे करेगा। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान के उपग्रह इमेजरी से हुए एक ताजा अध्ययन में 466 ग्लेशियरों के आंकड़ें जमा किए हैं, जिनसे पता चलता है कि 1962 से 2001 तक इनका आकार बीस फीसदी तक कम हुआ है। कई बड़े ग्लेशियर छोटे टुकडों में टूट गए हैं और सब तेजी से पिघल रहे हैं। इस इलाके के सबसे बड़े ग्लेशियरों में से एक पार्वती के अध्ययन में पाया गया है कि हर साल 170 फीट की रफ्तार से पिघल रहे हैं।

हिमालय के ग्लेशियरों के पिघलने से दुनिया खासी चिंतित हैं, खासतौर पर भारत और पड़ोसी देशों पर पड़ने वाले इसके दुष्प्रभाव को लेकर। हिमाचल में, जिन्हें दक्षिण एशिया की जल आपूर्ति का सेविंग अकाउंट माना जाता है। ये उन दर्जनों नदियों को जलमग्न बनाते हैं, जो करोड़ों लोगों का जीवन संवारती है, उनके जीने का आधार है। इसके तेजी से पिघलने का अर्थ है पीने के पानी की कमी और कृषि उत्पादन पर मंडराता खतरा, साथ ही बाढ़ और बीमारियों जैसी समस्याएं हैं।

एक अरब तीस करोड़ की आबादी के साथ लगातार तरक्की कर रहा भारत जल्द ही ग्रीन हाउस गैसों का ज्यादा बढ़ा उत्पादक बन जाएगा। जो भी हो मानव की दखल से हो रहे इस जलवायु बदलाव का भारत पर असर काफी भयानक होगा। वैज्ञानिक जानकारी का अभाव भी इस खतरे को और बढ़ा सकता है। नदियों के प्रवाह के आंकड़े इतने कम है कि हम समझ ही नहीं सकते कि ग्लेशियर के किस हद तक पिघलने का नदियों पर क्या असर होगा।

दुनिया भर में ग्लेशियर ग्लोबल वार्मिंग के बैरोमीटर माने जाते हैं। ग्रीन हाउस गैसों के असर से पूरी दुनिया के साथ ही हिमालय भी गरम हुआ है। हाल में हुए एक अध्ययन में पाया गया कि उत्तर पश्चिमी हिमलाय के औसत तापमान में पिछले दो दशक में 2.2 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हुई है। यह

आंकड़ा उसके पहले के सौ साल में हुई बढ़ोतरी से कहीं ज्यादा है। अध्ययन में यह भी अनुमान लगाया गया है कि जैसे-जैसे ये ग्लेशियर पिघलेंगे, बाढ़ की विभीषका भी बढ़ेगी, प्राकृतिक आपदाएं घटित होंगी और उसके बाद नदियां सूखने लगेंगी। इसका दोष दुनिया के औद्योगिकीकरण एवं सुविधावादी जीवनशैली जिनमें बढ़ते वाहन एवं वातानुकूलित साधनों के विस्तार को ही दिया जा सकता है, जिनसे ऐसी गैसों का उत्सर्जन हो रहा है, जो ओजोन के साथ-साथ ग्लेशियरों के लिये खतरनाक है, उन पर पाबंदी लगाने में हम नाकाम हो रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग को रोकना तो सीधे तौर पर हमारे बस में नहीं है, लेकिन हम ग्लेशियर क्षेत्र में तेजी से बढ़ती मानवीय गतिविधियों को रोककर ग्लेशियरों पर बढ़ते प्रदूषण के प्रभाव को कम कर सकते हैं। इस क्षेत्र में मानवीय गतिविधियों को पूरी तरह प्रतिबंधित करने के अलावा कई ऐसी तकनीक है, जिनसे ग्लेशियर और बर्फ को लंबे समय तक बचाए रखा जा सकता है। उच्च हिमालयी क्षेत्रों में रहने वाले लोग पुराने समय में बरसात के समय छोटी-छोटी क्यारियां बनाकर पानी को रोक देते थे। तापमान शून्य से नीचे जाने पर यह पानी जमकर बर्फ बन जाता। इसके बाद स्थानीय लोग इस पानी के ऊपर नमक डालकर मलबे से ढक देते। लंबे समय तक यह बर्फ जमी रहती और गर्मियों में लोग इसी से पानी की जरूरतें पूरी करते। इसी तरह, स्नो हार्वेस्टिंग का काम भी होना चाहिए। बर्फ की बड़ी सिल्लियों को मलबे में दबाकर रखा जा सकता है, जो लंबे समय तक बर्फ को जीवित रख सकती है। अब इन पुराने उपायों को फिर से अपनाने की जरूरत है साथ ही नवीन तकनीक विकसित किये जाने की जरूरत है ताकि इस बड़े संकट से बचा जा सके, मनुष्य जीवन पर मंडरा रहे खतरों को नियंत्रित किया जा सके।

सरकार से उम्मीदें

सर्वप्रथम माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी और भारतीय जनता पार्टी को जीत पर हार्दिक बधाई मेरा माननीय प्रधानमंत्री जी मोदी जी से निवेदन यह है कि और अपेक्षा भी रखता हूं कि आने वाले समय में यानी कि जो 5 वर्ष है उनका अगला कार्यकाल है उस कार्यकाल में खेलों की स्थिति में सुधार आए जिस तरह से ओलंपिक पोडियम या खेलो इंडिया की जो स्कीम उन्होंने चलाई हुई है उसके लिए उनको बहुत धन्यवाद साथ ही में उनसे यह कहूंगा कि जो रूलर इलाकों में या ग्रामीण क्षेत्रों में जो प्रतिभाएं हैं उनको किस तरह से आगे लाया जाए और सबसे महत्वपूर्ण बात जो खेलों में राजनीतिकरण हो रहा है उन खेलों के राजनीतिकरण को रोकना होगा जिससे प्रतिभावान खिलाड़ी आगे आकर पदक जीतें तथा कुछ जो गैरकानूनी संस्थाएं हैं उनको प्रतिबंध किया जाए जिससे खिलाड़ियों का समय बर्बाद ना हो खिलाड़ियों के लिए अलग से कानून बनाएं तथा राज्य स्तरीय, राष्ट्रीय स्तरीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभागी तथा पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को तुरंत प्रभाव से आर्थिक और सामाजिक मदद भी दी जाए और खेलों के अलावा महिला सुरक्षा जिस तरह से राजस्थान में पिछले कुछ समय से महिलाओं का जो शोषण हो रहा है उस पर भी उचित कार्रवाई करें जिससे भारत व राजस्थान क्राइम मुक्त हो साथ में प्रधानमंत्री जी से एक निवेदन रहेगा सेना के सभी ऑपरेशन गोपनीय रखे जाएं, टीवी चैनल पर केवल वही न्यूज़ दिखाई जाएं जिससे आतंकवादी संगठन को हमारे देश के जवानों की कमियों का एहसास ना हो।

गोविन्द सिंह
स्वर्ण पदक विजेता

नव निर्वाचित सरकार से अपेक्षा रहेगी कि, जन कल्याणकारी योजनाओं को इधर उधर न बिखेर कर, एक प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कराए। सुरक्षा व्यवस्था को और सख्त बनाया जाए। महिला व जघन्य अपराधों के केसों को एक टाइम लिमिट में खत्म करा जाए। थोड़ा सख्त सिस्टम हो सजा का, ताकि अन्य लोगों के लिए सबक रहे।

इवादीप सक्सेना
प्रोग्राम हेड, सक्षम संस्थान
NGO , **जयपुर**

जन उम्मीदें हों साकार

सरकार से लोगों ने बेशुमार उम्मीदें लगा रखी है। चाहे वो युवा हों किसान हो आधी आबादी, व्यापारी। वादों को पूरा करने में जैसे-जैसे विलंब होगा, लोगों की उम्मीदें टूटनी शुरू हो जाएंगी। किसानों को जहां अपनी कर्जमाफी की चिंता है, वहीं नौजवानों को रोजगार की दरकार है। समाज का कोई भी तबका ऐसा नहीं है, जिसने सरकार से अपनी बेहतरी के लिए कुछ न कुछ उम्मीदें न पाल रखी हों। अब सरकार इन बेशुमार उम्मीदों से कैसे निपटेगी, यह देखना काफी दिलचस्प होगा।

समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलते हुए विकास के वादे को साकार करे तभी हमारी उम्मीदें पूरी हो सकेंगी।

सरकार को न्यायपालिका पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। रिक्त पदों पर नियुक्ति के साथ ही न्यायालय परिसर की सुरक्षा व्यवस्था को और बेहतर बनाए जाने की जरूरत है। इसके अलावा अधिवक्ता समाज के कल्याण हेतु योजनाएं संचालित किए जाने की जरूरत है। शिक्षा ही वह कुंजी है जो हमें हमारे भविष्य को बनाने में हमारी मदद कर सकती है। नई-नई तकनीक की खोज करें ताकि हमारा देश तकनीक के क्षेत्र में आगे बढे और देश का विकास हो।

हमारे देश के ज्यादातर युवा नौकरी के पीछे भागते हैं जिसके कारण उनके अंदर का हुनर छुपा रह जाता है और वो कुछ अपना खुद का और मन का नहीं कर पाते। युवाओं को अपना स्टार्ट अप खोलना चाहिए और इसके लिए सरकार कई नई योजनाएं बनाये। देश के युवा मुद्रा योजना और स्किल इंडिया जैसे कई योजनाओ का फायदा भी उठा रहे हैं।

देश का सिद्धांत ही 'सर्वधर्म समभाव' पर चलता है जहा सारे धर्मो को समान भाव से देखा जाता हैं और हमें इस पर बखूबी अमल करना चाहिए। नई सरकार कोई भी बने सबका हित की बात करे सभी को लाभ मिसरकार को शिक्षा के गिरते स्तर पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। बेपटरी हो चली प्राथमिक शिक्षा को शिक्षकों के नियुक्ति की दरकार है। इसके अलावा माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में भी रिक्त पदों को भरने के साथ ही शैक्षिक माहौल बनाना सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए।

सरकार को सांप्रदायिक दंगों पर प्रभावी नियंत्रण लगाने के साथ ही अमन का माहौल कायम रखने की जरूरत है। समाज के उत्थान के लिए संचालित होने वाली योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए।

सरकार को व्यापारियों की समस्याओं पर भी ध्यान देना चाहिए। करों में रियायत के साथ ही जीएसटी को सरल व सुलभ बनाए जाने की जरूरत है, नई सरकार को युवाओं पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। हमें बेहतर शिक्षा के साथ ही प्रचुर मात्रा में रोजगार के अवसर भी मिलने चाहिए। बिना युवाओं को रोजगार मुहैया कराए देश के प्रगति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मजदूरों को नि:शुल्क इलाज के साथ ही आवास एवं अन्य सुविधाएं मुहैया करानी चाहिए।

सरकार को महिलाओं के प्रति विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। हमें हर जगह होने वाले शोषण से निजात दिलाने के साथ ही समाज में हर जगह बराबरी का हक मिलना चाहिए। इसके अलावा हमारी सुरक्षा पर भी विशेष ध्यान दिए जाने की जरूरत है।

नीरा जैन
जयपुर

रामराज्य की परिकल्पना

23 मई 2019 बृहस्पतिवार का दिन प्रात: 8 बजे से ही टेलीविजन खुल गया। रुझान आने शुरू हुए। दिल की धड़कन तेज होने लगी। सभी सांस रोके एकटक स्क्रीन को देख रहे थे। कभी वाह तो कभी आह का स्वर कमरे में गूंजने लगा। दोपहर का लगभग एक बजा था। सभी के चेहरे चमकने लगे। रुझान परिणाम में बदलने लगे। किस्मत का पिटारा खुलने लगा। मन झूमने लगा। आनंद का माहौल था क्योंकि - 'कमल' खिल रहा था। यह कमल भारतीयता की आन बान और शान का प्रतीक है। एकता अखंडता जीत रही थी और सांप्रदायिकता, गद्दारी ,बेईमानी हार रही थी। यह जीत जनता की उम्मीदों की थी। यह जीत सेना के मनोबल की थी। आतंकवाद और आतंकवाद का साथ देने वालों के मुंह पर यह करारा तमाचा था। देश की एकता और अखंडता पर जब भी संकट के बादल गहराते हैं, तब तब युग नायक पैदा होते हैं।

गांधीजी की रामराज्य की परिकल्पना अब साकार रूप लेती नजर आ रही है। जातिवाद तथा वंशवाद का वृक्ष उखड़ रहा है और कर्मवाद का स्तंभ जड़ जमा रहा है। साथ ही साथ जनता की अपेक्षाएं पुनर्जीवित हो रही हैं। बस एक ऐसा सुशासन चाहिए -

जिसमें ना आरक्षण हो,
जिसमें ना आतंक हो,
कश्मीर भी अपना हो ,
सच राम मंदिर का सपना हो,
किसान ऋण मुक्त हो,
युवक रोजगार युक्त हो।
एक स्वर्णिम युग की उम्मीद में -

डॉ. गीता कौशिक
एसोसिएट प्रोफेसर
दिल्ली विवि.

जल संरक्षण
राजस्थान की परम्परा

डॉ. स्वप्निल यादव
शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश

एक वक्त था कि कोई भी गांव अपना मल नदी में नहीं बहाता था। जबसे फैक्ट्रियां लगीं और शहरीकरण के नाम पर कंकरीट के जंगल खड़े हुए हमने अपना सब कुछ नदियों में फेंकना शुरू कर दिया, चाहें फैक्ट्री का वेस्ट हो या हमारा कचरा या मल वो भी नदियों में नालों के रास्ते उड़ेला जा रहा है। पहले हम केवल अपनी पूजा सामग्री को ही नदियों में डालते थे जो अधिकतर मिट्टी या बायोडेग्रेडेबल चीजों की बनी होती थी। लेकिन हमने अब आस्था के नाम पर प्लास्टिक, थर्माकोल, पेंट, प्लास्टर नदियों में डालना शुरू कर दिया। जो नदी की पारिस्थितिकी के लिए अनुकूल नहीं हैं। गांव के तालाब जमीन के लिए मिट्टी डाल कर खत्म कर लिए गए। वर्षा जल भी अब वापस जमीन में वापस नहीं लौट पा रहा है। आस्थाओं और परम्पराओं से दूरी हमें प्राकृतिक संसाधनों से दूर कर रही है और हम पानी भी खरीद के पीने पर मजबूर हैं। ऐसे में राजस्थान जैसे प्रकृति प्रेमी राज्य ने अपनी परम्परागत तकनीकों का सहारा लेकर वर्षा जल संचय की उम्मीदों में नयी जान डाली है। परम्परागत तकनीकें पूर्णत: आस्था का प्रश्न होने के साथ साथ वैज्ञानिक भी हैं।

राजस्थान में एक कहावत है कि यदि बहु एक घड़ा घी गिरा दे तो सास कुछ नहीं कहती, अगर पानी गिरा दे तो डांट जरूर पड़ती है। एक और कहावत है कि यदि साधारण मेहमान है तो मलाईदार दूध दो और विशेष मेहमान है तो पहले एक गिलास पानी दो फिर दूध। पानी भी लोटे में देते हैं जिसे ऊपर से पीना पड़ता है जिससे बचा हुआ पानी दूसरे कार्यों के लिए प्रयोग किया जा सके। प्रत्येक वर्ष मानसून की अनियमितता के कारण अतिवृष्टि एवं अल्पवृष्टि देश भर में कई राज्यों को प्रभावित करती है। राजस्थान में रेगिस्तानी इलाका होने के कारण, अल्पवर्षा, और नदियों में पर्याप्त जल की उपलब्धता न होना राजस्थान के लिए सदियों से संकट का कारण रहा है।

चांद बावड़ी दुनिया की सबसे गहरी बावड़ी हैं। इसकी संरचना विहंगम हैं जो कि मन मोह लेती हैं। यह बावड़ी 35 मीटर के वर्गाकार आकृति में बनी हुई हैं। यह 100 फीट गहरी हैं जो कि 13 मंजिला हैं । प्राचीन काल में वास्तुकारों और वहां के लोगों द्वारा जल संरक्षण और वाटर हार्वेस्टिंग के लिए बनाई गई इस प्रकार की कई बावड़ियां आज भी इस क्षेत्र में मौजूद हैं, जिनमें काफी पानी जमा रहता है। यह पानी क्षेत्र के निवासियों के वार्षिक उपयोग के काम में आता है। कुओं की अपेक्षा बावड़ियां ज्यादा गहरी होती हैं इसलिए इनमें

अधिक मात्रा में पानी संरक्षित करके रखा जा सकता है। पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग के निदेशक ह्रदेष शर्मा के अनुसार 'हेरिटेज वाटर वॉक' के माध्यम से जयपुर के नाहरगढ़ किले एवं आमेर महल में स्थापित अनूठी जल संग्रहण प्रणाली को पर्यटकों से रूबरू कराया जा रहा है जिससे वह इस बारे में जागरूक हों।

नाहरगढ़ की व्यापक जल संरक्षण प्रणाली इस किले की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। नाहरगढ़ में बने हुए जल संरक्षण टैंक में पानी लाने के लिए आस पास छोटी नहरों के जरिए पहाड़ियों से वर्षा जल नीचे आता है। इन नहरों के तल पहाड़ियों के ढलान पर इस तरह से बने हुए है कि वर्षा जल इनसे होता हुआ आसानी से आ जाता है।

आमेर किले की वाटर लिफ्टिंग और वाटर हार्वेस्टिंग प्रणाली अद्भुत है। आमेर महल में पानी के दो स्त्रोत मावठा झील और महल में मौजूद वर्षा जल संचयन प्रणाली अब भी देखी जा सकती है। नाहरगढ़ में पानी पहाडियों के माध्यम से नीचे आता है वहीं आमेर महल में पानी पहुंचाने के लिए मावठा झील से कुछ सौ फीट ऊपर पानी पहुंचाने के लिए जटिल व्यवस्था का उपयोग किया जाता था ।

जोहड़ का उपयोग प्राचीनकाल से होता आया है लेकिन मध्यकाल आते-आते लोगों ने जोहड़ को भुला दिया था जिससे जलसंकट उत्पन्न हो गया। खदीन का सर्वप्रथम प्रचलन 15वीं शताब्दी में जैसलमेर के पालीवाल ब्राह्मणों ने किया था। यह बहुउद्देशीय परम्परागत तकनीकी ज्ञान पर आधारित होती है। खडीन के निर्माण हेतु राज जमीन देता था जिसके बदले में उपज का 1/4 हिस्सा देना पड़ता था। जैसलमेर जिले में लगभग 500 छोटी बडी खडीनें विकसित हैं जिनसे 1300 हैक्टेयर जमीन सिंचित की जाती है। झालरा, अपने से ऊंचे तालाबों और झीलों के

आमेर किले की वाटर लिफ्टिंग और वाटर हार्वेस्टिंग प्रणाली अद्भुत है। आमेर महल में पानी के दो स्त्रोत मावठा झील और महल में मौजूद वर्षा जल संचयन प्रणाली अब भी देखी जा सकती है। नाहरगढ़ में पानी पहाडियों के माध्यम से नीचे आता है वहीं आमेर महल में पानी पहुंचाने के लिए मावठा झील से कुछ सौ फीट ऊपर पानी पहुंचाने के लिए जटिल व्यवस्था का उपयोग किया जाता था ।

रिसाव से पानी प्राप्त करते हैं। इनका स्वयं का कोई आगोर (पायतान) नहीं होता है। झालराओं का पानी पीने हेतु नहीं, बल्कि धार्मिक रिवाजों तथा सामूहिक स्नान आदि कार्यों के उपयोग में आता था। इनका आकार आयताकार होता है। कुई या बेरी सामान्यत: तालाब के पास बनाई जाती है। जिसमें तालाब का पानी रिसता हुआ जमा होता है। कुई मोटे तोर पर 10 से 12 मीटर गहरी होती हैं। इनका मुँह लकड़ी के फन्टों से ढंका रहता है ताकि किसी के गिरने का डर न रहे। पश्चिमी राजस्थान में इनकी अधिक संख्या है। भारत-पाक सीमा से लगे जिलों में इनकी मौजूदगी अधिक हैं।

टांका राजस्थान में रेतीले क्षेत्र मं वर्षा जल को संग्रहित करने की महत्वपूर्ण परम्परागत प्रणाली है। इसे कुंड भी कहते हैं। यह विशेष तौर से पेयजल के लिए प्रयोग होता है। यह सूक्ष्म भूमिगत सरोवर होता है। जिसको ऊपर से ढक दिया जाता है इसका निर्माण मिटी से भी होता है और सीमेन्ट से भी होता है।

1520 ई. में राव जोधाजी ने सर्वप्रथम एक नाड़ी का निर्माण करवाया था। पश्चिमी राजस्थान के प्रत्येक गांव में नाड़ी मिलती है। रेतीले मैदानी क्षेत्रों में ये नाड़ियाँ 3 से 12 मीटर तक गहरी होती है। इनमें जल निकासी की व्यवस्था भी होती है। यह पानी 10 महीने तक चलता है। नाड़ी वस्तुत: भू-सतह पर बना एक गढ्ढा होता है जिसमें वर्षा जल आकर एकत्रित होता रहता है। समय समय पर इसकी खुदाई भी की जाती है, क्योंकि पानी के साथ गाद भी आ जाती है जिससे उसमें पानी की क्षमता कम हो जाती है। कई बार छोटी-छोटी नाड़ियों की क्षमता बढ़ाने के लिए दो तरफ से उनको पक्की कर दिया जाता है। नाड़ी बनाने वाले के नाम पर ही इनका नाम रख दिया जाता है। अधिकांश नाड़िया आधुनिक युग में अपना अस्तिव खोती जा रही है। इन्हें सुरक्षा की आवश्यकता है।

यह पूरे देश के लिए अनुकरणीय है। अगर आज भी देश को जल संकट से उबारना है तो हमें अपनी परंपरागत तरीकों पर लौटना पड़ेगा, गांव के कुएं और तालाब पूरे भारत में पुनर्जीवित करने पड़ेंगे।

चुन्नू की सोच

मुझे याद नहीं मैं कहाँ पैदा हुआ पर मेरी माँ मुझे चुन्नू कह बुलाती थी। हमारा पूरा परिवार अनाज के गोदाम में रहता था। मुझे तेज दौड़ने, नये अनाज खाने और कपड़ों को कुतरने में बहुत मजा आता था। मां मेरी इसी चंचलता से चिंतित रहती। उसे लगता मैं कहीं पकड़ा न जाऊं। हमेशा मुझे खतरों से सावधान करती और इंसानों के द्वारा किये प्रपंचों के बारे में बताती।

हमेशा की तरह मेरी माँ और भाई चावल के नए बोरे में सुराख कर रहे थे और मैं अपने प्रयासों के लिए मिन्नत। पर मां ने ताकीद किया कि अभी तुम्हारे दांत मजबूत नही हैं। थोड़े और बड़े और पैने होने दो फिर सूतली को कुतरना। मैं मन मसोस कर दूर खड़ा था। अब तक बोरे में सुराख हो चुका था और हम सभी नए चावल के दाने खाने में मशगूल थे। तभी आवाज आई---इन चूहों ने तो नाक में दम कर रखा है। गोदाम का पूरा अनाज बर्बाद कर दिया। कुछ तो करना होगा। हम सचेत हो गए और जल्दी से बोरों के बीच छिप गए। मां इंसानों की योजना सुन चिंतित थी।

मैं सोचने लगा सिर्फ एक बोरे में ही तो छेद किया है और कुछ दाने ही तो खाएं हैं। क्या हमें पेट भरने का अधिकार नहीं है ? मां ठीक ही बोलती है कि मनुष्य बहुत स्वार्थी और जटिल प्राणी है। कितना नकारात्मक। तभी गोदाम की बत्तियां बन्द हो गईं और हम आश्वस्त हो गए कि गोदाम में अब कोई इंसान नही है।

मैं अक्सर माँ की नजरों से बचकर, नए बोरों पर दाँत चलाता और सुराख होने पर स्वयँ को तीस मार खां समझता। एक दिन मैंने एक डिब्बे में लडडू देखे, मुँह में पानी आ गया। बगैर सोचे समझे मैं दौड़कर गया और लड्डू खाने लगा। वास्तव में डिब्बा एक पिंजरा था जिसमे मैं कैद हो गया था। मैंने मां को मदद के लिए आवाज लगाई। लाख जतन करने पर भी पिंजरा

न तो टूटा न ही खुला। मां निराश थी उसकी आँखों में आँसू थे। भाई भी उदास था। मेरा तो रो रोकर बुरा हाल था। चिंता से निढाल हो गया और थोड़ी देर में सो गया।

अचानक हुई हलचल से आँखें खुली तो अपने आपको सुनसान जगह में पाया। शायद इंसानों ने मुझे दूर लाकर छोड़ दिया था। मैं बिल्कुल अकेला था। मैंने दौड़ लगाई और सड़क के किनारे पहुंच गया। जोरों से भूख लगी थी। पास में छोटा बच्चा नमकीन खा रहा था, मैं उसे याचना पूर्ण दृष्टि से ताकने लगा। उसने मुझे देख नमकीन का रेपर फेंक दिया। मैंने उसमें बची नमकीन को खा पेट भरा। मुझे वो बच्चा बड़ा नेक दिल और भला लगा। मैं उस बच्चे के पीछे चल पड़ा। सामने लंबी गाड़ी में उसे बैठते देख मैं भी गाड़ी में चढ़ छिप गया।

कुछ समय पश्चात हम एक बड़े घर पहुँच गए। सामने विशाल प्रांगण था और भारी संख्या में इंसान मौजूद थे। मुझे जोरों से भूख लगी थी। मैं भीड़ से बचता बचाता, आगे पहुँचा तो प्रभु जी को विराजमान पाया। उनके आगे मोदकों का थाल रखा था। मैं अतिशीघ्र थाल के पास पहुंच मोदक खाने वाला था कि एक चोटी धोतीधारी चिल्लाया ....अरे भाग चूहे .. सारा भोग अपवित्र कर देगा। मैं डर कर प्रभु के पीछे छुप गया। मुझे यह देख बड़ा अफसोस हुआ कि इष्ट देव का भजन कीर्तन हो रहा है और उनके वाहन का अपमान। मैंने ठान लिया जब भी प्रभु जी से मिलूंगा तो इंसानों की जरूर शिकायत करूँगा। पूजन के बाद जब लोग चले गए तो मैं प्रभु के पास गिरे मोदक के चूरे को खाने लगा। पेटपूजा कर प्रभु को प्रणाम किया। अंधेरा हो चला था, मौसी से पकड़े जाने पर जान जाने का डर था, अत: मैने शीघ्र घर में प्रवेश किया।

उस घर में कई कमरे थे , मैं एक कमरे में अंदर घुसा और चहलकदमी करने लगा। थोड़ी देर बाद बिस्तर पर चढ़ गया। दिनभर उछलकूद से थकान हो रही थी, मुलायम बिछौने में कब नींद आ गई, पता ही नहीं चला। पदचापों की आहट से मैं चौकन्ना हो गया। एक स्थूलकाय गंजे व्यक्ति ने कमरे में प्रवेश किया और बिस्तर पर बैठ गया। जैसे ही उसकी नजर मुझ पर पड़ी, वो घबरा गया और मुझे भगाने लगा। मेरी जान सांसत में थी, मैं तेजी से दरवाजे से बाहर निकल गया। पूरी रात मैंने सीढियों के किनारे गुजारी।

मुझे अब तक समझ में नहीं आया कि मेरी गलती क्या है ? ये इंसान छोटी छोटी बात पर मुझे क्यूँ डराते हैं ? भगाने पर क्यूँ उतारु रहते हैं ? फिर भी मुझे इत्मीनान था कि कम से कम जान तो बख्श देते हैं।

मैं सीढियों से उतर रसोई की तरफ चल पड़ा। वहां खाने पीने की चीजें भरी थी और मेरे कई भाई विचरण कर रहे थे। मैं जल्द ही उनमें घुलमिल गया। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था।

इंसानों के प्रति सकारात्मक सोच के साथ मेरी जिंदगी की नई शुरुवात हो रही थी।

ज्ञानेन्द्र मोहन खरे
औरंगाबाद (बिहार)

हारी नही है नारी

जन्म से पूर्व गर्भ में ही संघर्ष करना,
जन्म मृत्यु की अनिश्चितता से जूझना,
सीख लेती है नारी।
जन्म के बाद परिवार में लड़कों के समान अधिकार पाने,
वजूद बनाने के लिए,
संघर्षरत रहती है नारी। विवाह उपरांत प्रारंभ होता है,
अविराम संघर्ष।
स्वयं को हर रिश्ते के अनुकूल बनाने का,
सबको अपना बनाने,प्यार पाने का,
चुनौतीपूर्ण संघर्ष।
बदहवास सी दौड़ती हुई,
स्वयं के अस्तित्व को सबमें विलीन करती हुई,
और उन्हीं में अपने अस्तित्व को खोजती,
मानो स्वयं से ही संघर्षरत।
फिर भी सब रिश्तों को संतुष्ट,
न कर पाने के असंतोष को झेलती,
भोगती हुई दंश इन सबके बीच,
स्वयं के विलीन हो जाने का।
उम्र के अंतिम पड़ाव में भी,
हारती नहीं है, रहती है संघर्षरत।
बच्चों से अपेक्षित सम्मान पाने,
जिसकी अधिकारिणी है वह,
जिन्हें बनाने खुद को मिटा दिया,
भुला दिया खुद को संघर्ष में।
ताउम्र अपनी अस्मिता की रक्षा,
करने के लिए तो कदम-कदम पर,
संघर्ष करती ही रही है वह।
फिर भी हर पड़ाव, हर मोड़ पर,
ऐ जिन्दगी! तुझसे हारी नहीं है वह।
हर चुनौती ,हर युद्ध, हर संघर्ष,
के लिए तैयार है ।
क्योंकि असीम शक्तियों से युक्त है,
इसलिए आज भी हारी नहीं है नारी।

सुविधा पंडित
अहमदाबाद

मेरे पिताजी स्वर्ग के नजारे जैसे

चांद-सूरज और तारे जैसे,
मेरे पिताजी स्वर्ग के नजारे जैसे।
पूरी दुनिया में नही है,
उन जैसा कोई।
उनकी वजह से ही,
जागी है मेरी किस्मत सोई।
कभी ठंड में ठिठुरते,
तो कभी खुद को धूप में पाते है।
ना जाने कितनी परेशानियां झेलकर,
वो मुझको पढ़ाते हैं।
इस दुनिया में मैंने,
परखा है बहुतों को।
पर मिले नहीं लोग,
उनकी तरह मजबूत सहारे जैसे।
चांद-सूरज और तारे जैसे,
मेरे पिताजी स्वर्ग के नजारे जैसे।
पीपल की ठंडी छांव
जैसी होती है माँ,
वैसे पिता भी होते हैं,
संकटों से पार लगाने वाली नाव।
सचमुच इस संसार समुद्र में,
मैं डूब ही जाता,
अगर पिता नहीं मिलते,
मुझको किनारे जैसे।
चांद-सूरज और तारे जैसे,
मेरे पिताजी स्वर्ग के नजारे जैसे।

पुनीत कुमार
लुधियाना (पंजाब)

पर्यावरण की कहानी, उसी की जुबानी

आज मौसम कुछ उदास है
कहना चाहता मुझसे अपनी कोई बात है

आजकल कुछ सहमा सा रहता है
जरूर कोई ना कोई तो बात है
तभी आज बैठा गुमसुम सा उदास है!

जब मैंने पूछा -
'आज तुम्हारा बदन इतना मैला क्यों है'?
'क्यों बैठा तू इतना गुमसुम सा उदास है'?
तो पलटकर जवाब मिला-
ये सब तुम्हारा ही तो क्रिया-कलाप है
और पूछते मुझसे ,क्यों बैठा तू उदास है?

तुम करते इस पर्यावरण को गंदा
और लेना चाहते मुझसे,
सुख देने का विश्वास है ?
मैंने कहा आज देश कर रहा विकास है ,
किया जा रहा,
पर्यावरण को शुद्ध करने का प्रयास है
फिर भी तू हमसे इतना निराश है ?
तो कहने लगा -
'मानव कर रहा मात्र,
स्वयं का ही विकास है
पर्यावरण को स्वच्छ बनाना,
उसका दिखावा ही मात्र है
फिर भी तुझे नहीं हो रहा,
मेरी पीड़ा का आभास है?
क्यों करते तुम इस धरती को गंदा..
मेरे शुद्ध होने पर ही तो बची,
तुम्हारे हृदयों में सांस है!
यदि सच में चाहते हो,
इस धरती पर तुम जीना
तो करना पड़ेगा पहले तुम्हें,
शुद्ध पर्यावरण का विकास है..
शुद्ध पर्यावरण का विकास है..!!

लिज़ा चंदेल
जयपुर

पापा तुम सा कोई नहीं

जब थामे कोई हाथ मेरा
तब मैं तुझमें खो जाती हूं
तेरे नयनों में जैसी थी मैं
वैसी न किसी को भाती हूं

मैं जागूं तो तू जगता है
मैं मुस्का दूं तू हंसता है
सपने मेरे सपने हैं तेरे
तेरे संग खिल जाती हूं

जब थामे कोई हाथ मेरा
तब मैं तुझमें खो जाती हूं

बिन बोले ख्वाहिश पूरी हुई
अब होठों को सिल जाती हूं
कभी न बोले जोर से तुम
अब शोर से दंग रह जाती हूं
खड़े रहे तुम वृक्ष हो मेरे
अब धूप से मैं थक जाती हूं
पतझड़ में भी बहार हो मेरी
अब टूट के मैं गिर जाती हूं

बारिश की ठंडी बूंद से तुम
अब बर्फ से भी जल जाती हूं
दिल में बसती है याद तेरी
तस्वीर बनाती जाती हूं

जब थामे कोई हाथ मेरा
तब मैं तुझमें खो जाती हूं।।

माला रोहित कृष्ण नंदन
जयपुर

माँ

कल रात मेरे बिस्तर पे
मुझे एक आहट ने चौंका दिया
एक हवा का झोंका
मेरी पेशानी को छू गया...
आँख खुली तो माँ को देखा...

कुछ हिलते लब कुछ पढ़ते लब
धीरे से मुस्करा दिए,
माँ आज भी उठ कर रातों में
मेरी पेशानी को चूमती है और अपनी
सारी खुशियाँ मुझ पे लुटाती है
पर अचानक से हो गई वो मुझसे दूर
घबरा के खोली आँखें तो न थी,
वो न ही उसका साया
देखा था कल रात एक सपना,
सपने में माँ को
फिर अपने पास पाया!

रश्मि शर्मा
गाजियाबाद

फिर से जीने....

फिर से जीने का इंतज़ार
तुम्हारे हाथों को थाम कर
मद्धम कदमों से चलने का
लंबी दूरियों को छोटा
करने का इंतजार
साथ रहने घर बसाने का
मेरा तुम सा हो
जाने का इंतज़ार
आंखों के कोरों पर
अटके आंसुओं का
तुम्हारे दामन पर जज़्ब
होने का इंतजार
मैं, तुम और किस्मत
सब के एक हो जाने का इंतजार
अब बस तुम तक पहुंचने का
तुम्हें पा लेने का इंतजार.....!!

ऋतु गोडियाल
बरेली, उत्तरप्रदेश

'शेर की गुफा में चोरी'

एक दिन बड़ा गजब हो गया।
खोल तिजोरी शेर सो गया।।

फौरन घुसा गुफा में बंदर।
रखा दस नोट पाकिट के अंदर।।

साठ ले गया गेंडा लुकछुप।
खाया चाट-पकौड़ा गुपचुप।।

सौ रुपिये खरगोश निकाला।
जमा किया गुल्लक में डाला।।

बिल्ली रुपिये बीस उठाई।
टॉफी, बिस्किट, गोली खाई।।

दौड़ा सरपट-सरपट घोड़ा।
रखा पांच सौ बाकी छोड़ा।।

रुपिये तीस गधा भी मारा।
फुग्गे लिए और गुब्बारा।।

लगा वहां जब घुसने मोर।
हल्ला मच गया चोर-चोर।।

उठकर देखा शेर तिजोरी।
कुछ रुपिये थे बाकी चोरी।।

चाह शेर की जेल भिजाना।
रपट लिखाई जाकर थाना।।

आ गया भालू पुलिस वाला।
बचे रुपिये जेब मे डाला।।

भालू बोला, 'शेरू भाई'।
यह है मेरी रपट लिखाई।।

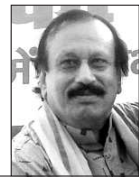

उमाशंकर 'मनमौजी'
भोपाल (म.प्र.)

पिता खुशियों का खजाना

पिता
हर दुख को
हर गम को
सहने वाला
पर कभी अपनी पीड़ा को
मुख पर ना लाने वाला
बच्चों की हर ख्वाहिश
की खातिर
जी जान लुटाने वाला
हौंसला,हिम्मत देने वाला
खुद अपनी भूख दबाकर
हमारा पेट भरने वाला
संस्कार और अच्छे विचारों को पोषित
करने वाला
अपना सब कुछ
दाँव पर लगाकर
हमारा भविष्य बनाने वाला सच कहूँ मेरे
दिल की बात
मेरे लिए पिता का दिल है
खुशियों का खजाना
मुझे मेरे पिता ने बहुत नाजों से है
पाला.....।

रेनू शर्मा 'शब्द मुखर'
जयपुर

इतने दिनों बाद

बेशक देखा तुम्हें
इतने दिनों बाद
पर मिले मुझे तुम कहीं
दिल के उतने ही पास..
शायद कुछ अहसास तुम्हारे
मेरे दिल के इतने पास थे
कि मिलते ही एक दूजे के
संग-संग चलने लगे ..
तुमको सोचूँ या अब तुम्हारी बातें
जाने कितने ही भाव अब
निःशब्द कहीं मेरे
अन्तः में बहने लगे ...
तुम्हारी कही बातों में भी
एक छिपा मौन
जाने क्या-क्या आँखों से बोलता रहा,
जिसको मेरा मन शब्द-ब-शब्द पढ़
तुमको स्वयं में समेटता रहा...
तुम्हारा पुनः मिलना कुछ इस तरह
परम निमित्त था
पर उसकी इस इच्छा में
शायद हमारा भी
कोई प्रारब्ध जुटा था..

प्रगति गुप्ता
जोधपुर

दोहे

धीरे-धीरे ढल रही, इस जीवन की सांझ।
ना जाने कब तक बजे, सांसों की ये झांझ।।

मैं हूं धागा सूत का, तू रेशम का तार।
फिर कैसे निभता भला, मेरा-तेरा प्यार।।

जब-जब सोचा मैं लिखूं , कोई सुंदर गीत।
तब-तब शब्दों में ढली, तेरी-मेरी प्रीत।।

मैं इक बेकल सी नदी, तू सागर बेचैन।
तेरे बिन कटते नहीं, अब मेरे दिन-रैन।।

बेजुबान भी सह रहे, नित गर्मी की मार।
दाना-पानी दीजिए, करिए कुछ उपकार।।

होली खेली श्याम से, लगा प्रीत का रंग।
मोहन ने जितना रंगा, उतना निखरा अंग।।

अपनी-अपनी है विधा, अपना-अपना ज्ञान।
पंख लगाकर शब्द के, कवि मन भरे उड़ान।।

योगिता 'जीनत'
जयपुर

कितने सूरज लील गया दावानल

सूरज के साथ आज भी कई घरों के चिराग रोशन हुए थे।
कई घर उनकी खुशियों के प्रकाश से टिमटिमा रहे थे।
मम्मी पापा उनमें भविष्य के सूरज सा उजियारा देख रहे थे।
नाश्ते की मेज पर बच्चों के नखरे पूरे करते फूले नहीं समा रहे थे।
चिराग बोला, मम्मी आज आखरी बार दूध पी रहा हूं, पसंद नहीं।
मम्मी को क्या पता था, उसने मान रखने को पिया या फिर..
उधर, एक और सूरज भी जल्दी आने का कह घर से निकला था।
क्लासेस में थक जाता हूं, आ कर फिल्म जाऊंगा, कहा था।
बच्चे कोचिंग, पापा ऑफिस, मम्मी काम में व्यस्त हुए थे।
दोपहर को सूरत जल रहा था, हर श्रमिक थक सुस्ता रहा था।
घरों में आज तूफान से पहले की शांति होगी, ये किसे पता था।
क्लासेस के चौथे माले मंडराता मौत का साया किसने देखा था।

प्रदीप जोशी
अहमदाबाद

वहां तो जीवन का पाठ पढ़ते बेटों की हंसी गूंज रही थी।
यकायक प्रचंड धूप में बिजली का दावानल धधक उठा था।
लपका तो कलम रो उठी, पुस्तकें फड़फड़ाई बेंच उलटी पड़ी थी।
धुंए के गुबार में भविष्य घुट गया और जिंदगी जिंदा जल रही थी।
चीखते मासूम लिपट कर भुन गए, जो बचे खिड़की से कूद गए।
तमाशाई दमकल और भीड़ बेबस रो रही, कुछ वीडियो बना रहे थे
एक एक कर जिंदगी मर रही थी, पत्तों की तरह बच्चे गिर रहे थे।
मौत का तांडव और चीखों के कोहराम में तंत्र ध्वस्त खड़ा था।
घरों से सड़कों तक हर तरफ सूरत में मातम पसरा था।
देश स्तब्ध, मानवता जड़ और काल फिर निष्ठुर खड़ा था।
अतिमहत्वाकांक्षा की मानसिकता, कमाई की भूख कब मिटेगी,
कब बदलेगा मेरा देश, आज फिर ये यक्ष प्रश्न खड़ा था।

गतांक से आगे....

उड़ती चील का अण्डा

''उड़ती चील का अण्डा'' एक मुहावरा है जो ग्राम्यांचल में प्रचलित है। किंवदन्ती यह है कि 'चील' उड़ते-उड़ते ही अण्डा देती है। उसका अण्डा भूमि परआकर असहायावस्था में गिरता है और बिना मां के ही उसका जीवन अनिश्चय की स्थिति में पलता और चलता है। वह जीवित भी रहेगा या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता। इसी प्रकार जब किसी शिशु की माता उसके बचपन में ही अपनी संतान को बेसहारा छोड़कर स्वर्ग सिधार जाती है, तो ऐसे शिशु को समाज ''उड़ती चील का अण्डा'' कह-कहकर अपनी संवेदना व्यक्त करता है।

सोचने से क्या होता है। मन का चीता कभी पूरा नहीं होता। हरि-चीता ही होता है। परिवार चोखा हँसता-खेलता चल रहा था। माता कैलाशवती अपनी पुत्री को मायके लाने के लिए कौशल किशोर को गणेशपुर भेजने का कार्यक्रम बना रही थी। सभी की इच्छा थी कि विद्या को ससुराल गये लगभग एक वर्ष होने को आ रहा है। वह पिछली सक्रान्ति के बाद ससुराल गई थी। अब भी सक्रान्ति आने वाली है। वह यह सक्रान्ति भी यहीं आकर मना लेगी। वह भाई-भाभी तथा माता-पिता से भी मिल जायेगी। सारा परिवार इसी मोद में मग्न था।

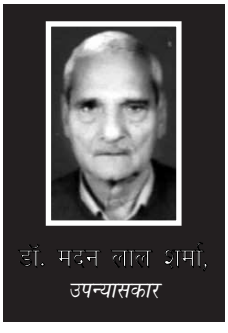
डॉ. मदन लाल शर्मा,
उपन्यासकार

परन्तु उनके घर पर दुष्ट ग्रह इस तरह चुप-चाप आकर बैठ गये थे कि किसी को उसकी आहट तक सुनाई नहीं दी थी। काल-घंट बजने को बेचैन था।

मनुष्य का स्वभाव भी बड़ा विचित्र होता है। सुख के समय उसे युग-युगान्तर तक सुख का समुद्र ही लहाराता दिखाई देता है क्योंकि उस समय अनिष्ट के बादल स्वयं ही छँटते चले जाते हैं और सुख का नीला आकाश अपनी आभा के इन्द्रधनुष से सभी को अचेत सा कर देता है। परन्तु सुख के पीछे छिपा हुआ दु:ख अपना दांव देखता रहता है। अचानक काली और कौशल दोनों बीमार पड़ गये। उन्हें जुकाम-बुखार और खांसी ने जकड़ लिया था। बुखार लम्बा खिंचता जाता था।

...क्रमश: अगले अंक में

'आज की शिक्षा प्रणाली का स्तर'

किसी राष्ट्र की शिक्षा का स्तर वहां के आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक विस्तार का आधार होता है । अगर एक राष्ट्र की शिक्षा का स्तर उच्चतम है तो वह वहां पर रह रहे नागरिकों के उज्जवल भविष्य का सूचक माना जाता है। पर क्या हमारे राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली गुणवत्ता के मापदंड में एकदम खरी उतर रही है? क्या यहां पर शिक्षा प्राप्त करने वाले लोग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों में अपना परचम लहराने में सफल हो रहे हैं ? क्या वजह हैं, कि यहां के युवा उच्च शिक्षा के लिए बाहर के देशों की ओर पलायन कर रहें हैं? वजह एक नहीं कई है बुनियादी तौर पर कहा जाए तो शिक्षा का स्तर छोटी कक्षाओं से घटते घटते बड़ी कक्षाओं तक बिल्कुल ही निम्न रह जाता है। पुराने जमाने में बुद्धिमत्ता का प्रतीक माने जाने वाले अंक आज कहने में वैसे भले ही बड़ रहे हैं , पर उनका औचित्य शून्य मात्र ही है । क्या यह हमारी शिक्षा प्रणाली के लिए चिंता का विषय नहीं होना चाहिए कि जहां आर्यभट्ट , एम. विश्वेश्वरैया, ए.पी.जे.अब्दुल कलाम, जयंत नार्लीकर जैसे अनगिनत महान भारतीयों के नामों में आने वाले समय में और नाम नहीं जुड़ पाएंगे, क्योंकि कहीं ना कहीं हम ही इस परंपरा को तोड़ते जा रहे हैं। बस अंकों को ही बुद्धिमत्ता का आधार बनाकर हम भविष्य के साथ खेल रहे हैं हमें सर्वप्रथम अपनी शिक्षा प्रणाली में कुछ आवश्यक बदलाव लाने होंगे जैसे बुद्धि की परीक्षा बुद्धि से ही हो इसमें किसी भी प्रकार का व्यवसायीकरण न हो, कुछ हद तक दंड का प्रावधान पुन: लागू होना चाहिए, ताकि बच्चों में डर बना रहें और वह अनुशासित हो सकें, इसके साथ साथ शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो जिसके द्वारा एक सुनहरे भविष्य की नींव रखी जा सके और आर्थिक स्तर पर युवाओं को कहीं दूसरे देशों की शरण में ना जाना पड़े । इस तरह से हम न केवल अपनी अगली पीढ़ी को संवारेंगे बल्कि एक सुदृढ़ परंपरा का आरंभ भी करेंगे जिसमें नित नए वैज्ञानिक, दार्शनिक, साहित्यिक, अर्थशास्त्री एवं इन जैसी कई हस्तियों को जन्म देने में भारत का नाम जन्मोजनमांतर तक सुनहरे अक्षरों में प्रथम स्थान पर लिखा जाएगा।

सुमनजीत कौर
जयपुर

मां के नाम रही सुमधुर काव्य महफिल 21

70 से अधिक युवा कवियों ने सुनाई रचनाएं

सतपाल सोनी को मिला पोएट ऑफ द मंथ पुरस्कार

जयपुर। साहित्यिक गतिविधियों की अग्रणी संस्था सुमधुर की काव्य महफिल-21 का आयोजन जेएलएन मार्ग स्थित स्काई कार्नर कैफे में किया गया। इस अवसर पर जयपुर व राजस्थान के अन्य शहरों से आये 70 से अधिक युवा कवियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और इस बार पूर्व घोषित विषय 'माँ' को आधार बना कर अपनी काव्य प्रस्तुति दीं, कार्यक्रम में 100 से अधिक काव्य प्रेमियों ने श्रोता रूप में भी शिरकत की।

कायक्रम के आरंभ में सर्वत बानो ने 'मेरे मौला तेरा हम पर ये इक अहसान हो जाए, यहाँ इन्सान है जो भी, फकत इन्सान हो जाए' सुनाकर दाद बटोरी। इसके बाद सोफिल डांगी ने 'मेरा सब मेरी माँ से है' फिर श्याम बाबू आहत ने 'न बोली न भाषा की पाबंदियां, जुबां प्यार की है इशारात की' सुनाकर श्रोताओं की प्रशंसा पाई।

इसके बाद अंकित भारद्वाज ने 'मेरे मंदिर और चारों धाम,मेरा संसार तुम ही हो' तुम बिन मेरी दिवाली,होली ना कोई तीज आती है' सुनाया फिर शिल्पी पचौरी ने 'पिता मैं बहुत थोड़ी हूँ तुम्हारी , और बहुत सारी हूँ उसकी, जिसके नाम से वंश नहीं चलते, जिसका नाम नहीं जानती सरकारी फाईलें' इसके बाद 'सन्तोष पुरस्वानी सन्त' ने 'मेरा तुझसे मिलना अब नामुमकिन है, मैं अपने अंदर में गुम हो बैठा हूँ' सुनाया। फिर विशाल गुप्ता, अरविंद शर्मा, सिद्धार्थ जैन, कुमार यादव, उदय सिंह, रोशन नागर, अभिलाषा पारीक, कबिराज चेतन, विजय लक्ष्मी जांगिड़, पीयूष तिवारी, प्रिया राठौड़, कुणाल आचार्य, सहित 70 से अधिक कवियों ने अपनी काव्य प्रस्तुति दीं। सुमधुर के संस्थापक प्रवीण नाहटा और अतिथि विशेष दिव्यांशु बरडिया ने वीर रस के कवि सतपाल सोनी को मई माह का सुमधुर पोएट ऑफ द मंथ का खिताब प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन तनेश ने और फोटोग्राफी विशाल गुप्ता ने संभाली।

सुमधुर नवांकुर — माह का उत्कृष्ट कवि/शायर

माही संदेश

प्रत्येक माह हम परिचय कराएंगे सुमधुर साहित्यिक संस्था के एक नवांकुर कवि/शायर से...

सतपाल सोनी

छानी बड़ी (हनुमानगढ़)

धरती का बेटा था मैं गया जीवन फसल उगाने में
अभिलाषा लेकर लहू को सींचा था खेत खजाने में
जो भी था वो सब चला गया नही बचा है और लूटाने में
अब तो सूरज चाँद बिके एक वक्त का खाना खाने में

जिसकी मेहनत है माटी में उस चंदन के उपजारे को
मैं हाथ जोड़कर नमन करूँ धरती के राज दुलारे को
जहाँ पीड़ा की भी चीख उठे वह दशा देख अन्नदाता की
यहाँ सब कुछ गिरवी है उसका भूखी है आंत सुजाता की

जब हरित राष्ट्र का सपना लेकर बेलों के संग चलता है
दुनिया की भूख मिटाने को वह रामदूत सा लगता है
लेकिन जब अंधियारा छा जाए किस्मत की फुलवारी पर
इन सदन के राजघरानों को वह एक मुद्दा सा लगता है

एक दिन भी जब थका हुआ मैं खाना लेकर आया था।
चहुँ और अचंभित थे घर पर वह कैसा मातम छाया था
मेरी नन्ही चांदनी भूखी थी वह मुझको नहीं सुहाया था
मैं थोड़े आटे के बदले हल गिरवी रखकर आया था

सुनो देश के विद्वत जन जहाँ कृषक से धोखा होता है
आशाओं का सूरज निश्चित घोर अंधेरा होता है ।
धीरज ढह जाता है जब कोई बच्चा भूखा रोता है ।
जिसके दम पर पेट भरा वह धरती पुत्र इकलौता है।

सड़क सुरक्षा का दिया संदेश

''राजस्थान के सात डिवीजनल हैडक्वार्टर्स में राज्य की कुल सड़क दुर्घटनाओं में से 50 प्रतिशत मौतें'

जयपुर। सड़क सुरक्षा के क्षेत्र में कार्यरत जयपुर के फाउंडेशन 'मुस्कान फॉर रोड सेफ्टी' की ओर से राजस्थान के सभी 33 जिलों में राज्यव्यापी सड़क सुरक्षा अभियान चलाया गया। इस मुहिम के तहत राज्य के सभी 33 जिलों में सड़क सुरक्षा कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इनका उद्देश्य राजस्थान के प्रमुख शहरों में रोड सेफ्टी वॉलेंटियर्स तैयार करना और सड़क सुरक्षा को बढ़ावा देना था। गौरतलब है कि राज्य के 33 जिलों में वे सात डिवीजनल हैडक्वार्टर भी शामिल हैं जिनमें सड़क दुर्घटना मृत्यु की दर अधिक है। यह दर राजस्थान परिवहन विभाग की रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान राज्य में हो रही सालाना दुर्घटना मृत्यु संख्या का 50 प्रतिशत है। मुस्कान की प्रोजेक्ट डायरेक्टर नेहा खुल्लर ने आगे बताया कि जानलेवा दुर्घटनाओं की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए मुस्कान संस्था की ओर से सम्पूर्ण प्रदेश में पुलिस और इंडस टावर्स लिमिटेड के साथ मिलकर काम किया जा रहा है। कार्यक्रम के अंतर्गत पहले वॉलेंटियर्स के लिए तीन घंटे की कार्यशालाएं आयोजित की गई और फिर रोड कैम्पेन किए गए।

साहित्यकार रशीद अहमद शेख सम्मानित

इंदौर। साहित्यिक संस्था 'साहित्य कलश मप्र इन्दौर' द्वारा आयोजित विशिष्ट अलंकरण एवं सम्मान समारोह में इंदौर शहर के वरिष्ठ साहित्यकार रशीद अहमद शेख को विशिष्ट साहित्य अलंकरण से सम्मानित किया गया। संस्था अध्यक्ष चंचल रिझवानी ने बताया कि रशीद अहमद शेख कई साहित्यिक संस्थाओं के सम्मानित सदस्य हैं, गीत-गजल और मुक्तक लेखन में आपकी एक विशेष पहचान है। कौमी एकता पर भी आपने कलम चलाई है।

इस अवसर पर बृजमोहन शर्मा बृज, हरीश सिसोदिया साथी, जयनारायण पाटीदार कुंवर, बालकराम जी शाद, राहुल बजरंगी, दिनेश शर्मा, जितेंद्र राज, जितेंद्र शिवहरे, धर्मेन्द्र अम्बर, अशफाक हुसैन, मनोहर लाल सोनी बाबा, राहुल मिश्रा इलाहाबादी, सुनिल सूर्यवंशी सिपाही आदि ने इस सम्मान के लिए उन्हें बधाई दी।

'माही संदेश' में विज्ञापन दें

एक स्वाभाविक प्रश्न जो मन में आता है कि आप 'माही संदेश' मासिक पत्रिका में विज्ञापन क्यों दें.....तो इसके लिए आपके पास बहुत से कारण हैं..जैसे,

वर्तमान में युवा पीढ़ी साहित्य की ओर बहुत तेजी से आकर्षित हो रही है और 'माही संदेश' पत्रिका में साहित्य, समाज और जीवन के विभिन्न पक्षों पर सर्वाधिक बल दिया गया है और इसका प्रकाशन अनुभवी साहित्यिक व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है जिससे युवा पीढ़ी तक आप सहज ही पहुंच सकते हैं।

हमारे साथ जुड़े विभिन्न सामाजिक संगठन एवं संस्थाओं, सरकारी कार्यालयों में 'माही संदेश' मासिक पत्रिका निरंतर पहुंच रही है। जिससे आपका विज्ञापन हर आयुवर्ग के व्यक्ति तक पहुंच पायेगा।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका गुणवत्ता युक्त पाठ्य सामग्री को समेटे हुए हैं जिससे इसका एक व्यापक पाठक वर्ग है।

विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के विशेष कवरेज के कारण निश्चित रूप से हमारे साथ आप भी शीघ्रता से निरन्तर आगे बढ़ेंगे ऐसा हमारा प्रयास और विश्वास है।

खोखले दावों के विपरीत वास्तविकता के धरातल पर हम आपका हमारे साथ जुड़ने पर स्वागत करते हैं।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका विज्ञापन दर

पत्रिका का कवर पृष्ठ	₹ 50,000
सामने के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
पीछे का कवर रंगीन	₹ 40,000
पीछे के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम पृष्ठ	₹ 6,100
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम आधा पृष्ठ	₹ 3,100

संपादक
माही सन्देश
खाता संख्या
37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखा: कनक विहार,
हीरापुरा, जयपुर
पेटीएम-9887409303
दूरभाष- 9887409303

मुसाफिरनामा

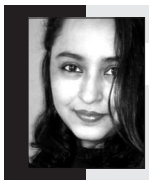

डॉ. संस्कृति शर्मा
समीक्षक

पुस्तक : मुसाफिरनामा
लेखक : कर्नल अमरदीप सिंह 'सेना मेडल'
प्रकाशक का नाम : बोधि प्रकाशन, जयपुर
संस्करण : 2019,
मूल्य : 175 रूपये

सुप्रसिद्ध अंग्रेजी टीवी श्रृंखला 'गेम ऑफ थ्रोन्स' में एक चरित्र है 'थ्री आई रेवन' (तीन नेत्रों वाला काक (कौआ), जिसे दुर्दमनीय खलनायक, 'नाइट किंग' (रात का राजा) इसलिये मार देना चाहता है क्योंकि वह इतिहास का चल और जीवंत दस्तावेज है। किसी भी सभ्यता और संस्कृति का विनाश करना हो तो उसके इतिहास को विनिष्ट कर देना सबसे मारक अस्त्र है, इसी प्रकार इनके संरक्षण का सर्वोत्तम मार्ग है जनता को इतिहास से किसी भी माध्यम द्वारा जोड़े रखना।

बोधि प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'मुसाफिरनामा' यही कार्य बहुत सफलतापूर्वक करता है। सेना पदक विजेता कर्नल अमरदीप सिंह ने इस पुस्तक में स्वयं के, जनता, राष्ट्र और साथ ही दुनिया के सफर को बहुत सुरूचिपूर्ण ढंग से परोसा है। यहां रस भी है, स्वाद भी, आनंद भी है और तृप्ति भी! 'मुसाफिरनामा' में पाठक को 2017 के उत्तरार्ध से लेकर, 2019 के प्रारंभ तक के राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय समाचारों, समसामयिक घटनाओं, ज्वलंत मुद्दों और सामाजिक सरोकारों की जानकारी और विश्लेषण, बहुत रोचक और सारगर्भित आलेखों द्वारा स्वत: मिल जाते हैं। इसका स्वस्थ हास्य चुटीली, व्यंग्यात्मक और तथ्यपरक शैली पठन यात्रा को रोमांचक बना देते हैं।

मुसाफिरनामा की प्रासंगिक ताजगी इसका वैषिष्टय है। स्वर बहुत निष्पक्ष और निर्भीक! मुसाफिर जनता को जागरूक भी करता है और 'प्रबुद्ध पाठकों' को स्वयं विवेकपूर्ण निर्णय लेने के लिये भी कहता है। हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही महिलाओं की सराहनीय उपलब्धियों के उदाहरण देते हुए वह महिला सशक्तिकरण की बात उठाता हुआ बोलता है – 'ये सप्ताह अवनी चतुर्वेदी के नाम किया जाए तो गलत नहीं होगा। देश की लड़ाकू जहाज उड़ाने वाली पहली महिला पायलट ने इतिहास को नयी दिशा दे दी है। उनके अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प को मुसाफिर का सलाम। बाकी लड़कियों के लिये न केवल अवनी प्रेरणास्त्रोत बनी है बल्कि देश सेवा को एक नया आयाम भी मिला है। जय हो।'

पर इसी के साथ वह बेबाकी से 'मी टू' मुद्दे पर भी राय रखता है– 'मी टू नाम से बड़ा मुद्दा उछाला जा रहा है और साथ ही उछल रहे हैं बड़े-बड़े नाम भी। मुद्दे के कई पहलू हैं और मुसाफिर का आग्रह रहेगा कि सिर्फ एक तरफा बयानों से अपनी राय कायम न करें। समस्या बड़ी है पर वैसी नहीं जैसा आंटी लोग बता रहे हैं। मीडिया और बॉलीवुड से मुसाफिर को सहानुभूति भी नहीं है – क्योंकि यहाँ स्वार्थ का बोलबाला है। दूध का धुला कोई नहीं है। महिलाओं की स्थिति के लिये पूरा समाज उत्तरदायी है जिसमें महिलाएँ भी शामिल हैं।'

पूरे मुसाफिरनामा में आपको खेल से जुड़े समाचारों के रूप में लेखक की खेलप्रियता दिखती रहेगी। क्रिकेट के वर्चस्व के मध्य फुटबाल में देश के अच्छे प्रदर्शन पर उल्लास के साथ अंतर्निहित संदेश में अन्य खेलों यथा – हॉकी, बैडमिंटन, शतरंज, निशानेबाजी आदि के उत्थान और उनमें हमारी उपलब्धियों पर चिंतन भी मिलेगा – 'आईपीएल समाप्त हुआ, सभी टीमें और खिलाड़ी आपकी जेबों से करोड़ों रूपये कमा कर घर पहुँच चुके हैं और अब उनके आका नए डाकों की तैयारी में जुट गए हैं। समय भी आपका वक्त भी आपका। हॉकी की टीम कहाँ धूल फांक रही है या तीरंदाज क्या कर रहे हैं या फिर पहलवान ही किसे पटखनी दे रहे हैं उससे पूरे देश को कुछ लेना नहीं। हमारे देश के सुपरमैन सिर्फ क्रिकेट खेलते हैं। खेल के बड़े बब्बा ध्यान दें।' वे आमजन से और खेलों को भी तबज्जो देने की अपील करते हुए कहते हैं – 'लल्ला लल्लियाँ जो मैडल ला रहे हैं वो वर्षों की लगन का नतीजा है और कोई भी बाबा धोनी या तेंदुलकर से कम नहीं है। उन्हें प्रोत्साहित करें और समाज में उनके प्रति चेतना जगाएँ।'

मुसाफिरनामा में यात्रा का प्रारंभ और विस्तार – समाचार पत्रों के बढ़ते व्यवसायीकरणय मीडिया की अपने मूल दायित्व से विमुखताय सामाजिक मूल्यों, नेताओं और राजनीति के पतनय समाज में बढ़ती अराजकता देश के अन्नदाता की दयनीय स्थिति सांप्रदायिक सौहार्द्र कश्मीर और वैश्विक आतंकवाद पर चर्चा, पर्यावरण की समस्या, चिंता और समाधान – से होता है। ये विषय जितने गंभीर, गरिष्ठ और दुरूह हैं, इन्हें उतनी ही सहज, सरल, प्रांजल भाषा और शैली में उठाया गया है। किसी भी विषय का अनावश्यक विस्तार नहीं है। शब्दों की सीमा, गठन, सुंदरता और भाव में आम और खास वर्ग दोनों की समझ और पसंद का ध्यान रखना यह बताता है कि लेखक की पाठकों की नब्ज़ पर पकड़

अच्छी है।

मुसाफिर की निष्पक्षता में सुरक्षित तटस्थता नहीं अपितु गहन संवेदनशीलता है। वह छद्म देशभक्त नेताओं से चेताता है और देश का धन लेकर भागे दरिद्र पूँजीपतियों से भी – 'चौकसी होती तो मियाँ चोकसी न होते!' कानूनी विसंगतियों और न्यायतंत्र पर भी वह मुखर है – 'सलमान के लिये कुछ घंटों में 'बेल' और गरीब आदमी के लिये वर्षों तक कानून के दरवाजे की खराब 'बेल'!' गंभीर कथ्य के बीच शब्द-खेल और चमत्कार पाठकों को अपने आकर्षण में बांधे रखते हैं।

मुसाफिर की दृष्टि सूक्ष्म है पर दृष्टिकोण बहुत व्यापक! यह व्यापकता विस्तृत विषय-वस्तु में स्पष्ट दिखती है, चाहे वह हिंदी प्रेम हो – 'हिंदी साहित्य पढ़ें, हिंदी बोलने में संकोच न करें। अंग्रेजी सिर्फ भाषा है, ज्ञान का मापदंड नहीं है। गुड मॉर्निंग की जगह जय हिंद बोलिये, वो भी देश सेवा ही है।' – या फिर राष्ट्रभक्ति, संस्कार, शिक्षा, स्वास्थ्य और मौसम की बात। मुसाफिर, जनता, जनता के प्रतिनिधियों, सरकार, मीडिया, न्यायपालिका के नैतिक दायित्वों पर सशक्त टिप्पणी और राय व्यक्त करता है तथा उनका आवाहन करता है- 'मीडिया से अनुरोध है कि अपने अंदर झाँकें और किसी भी बात पर टिप्पणी करने से पहले सब पक्षों पर विचार करें। देश में सौहार्द्र बनाये रखना सभी की जिम्मेदारी है और मीडिया की सबसे ज्यादा। टीआरपी के चक्कर में देश को तोड़ने वाली ताकतों को समर्थन न दें।'

गर्मियों की छुट्टियाँ हैं, मुसाफिर आपको अनेक सुझावों में एक सुझाव स्वदेश भ्रमण का भी देता है। यदि आप अपनी जड़ों से जुड़े रहना चाहते हैं तो मुसाफिरनामा के हमसफर बनें। यह यात्रा नि:संदेह आपके लिए बेहद सुखद और अविस्मरणीय रहेगी। दैनिक रेलम पेल के बीच जो स्टेशन छूट गये होंगे, आप उन्हें भी तय कर लेंगे।

अनुभवों की गाथा है 'अनुभूति'

कवि दशरथ अपने जीवन के साक्षात् अनगिनत अनुभवों को समेटकर अपनी सन्दूकची में भर लेता है उनका नाम ही 'अनुभूति' है। जब नन्हे बच्चे का सपना पूरा होता है और वह कैसे खुशियां बांटता है उसी प्रकार कवि भी अपनी अनुभूति के अनुभवों को याद कर के भीतर से गदगद हो जाता है। कवि अपने सहज, सरल नैनों से हिंदू-मुसलमान की बजाय सिर्फ इंसान देखता है।

हिंदू देखता हूँ ना मुसलमान देखता हूँ
दोस्ती के दर्पण में सिर्फ इंसान देखता हूँ।

इंसानियत को जिंदा रखने की जिजीविषा के कवि दशरथ ने लोगों को जीने का तरीका बताया कि लोगों को ख्वाहिशें कुछ कम रखनी चाहिए। कवि अपनी माँ को प्रथम कविता में पूजनीय स्थान पर रखकर वंदन करते हुए स्मरण करता है कि हे माँ! तुम्हारे जाने के बाद मेरा जीना दुश्वार हो गया है। हे माँ जिसे स्नेह से सींचा उसको भेज दे प्यार की पाती माँ तो दूसरी तरफ घर में बेटी के सूनेपन को इस तरह से कविता में अंकित करते हैं कि आँखें भर आती हैं। आप कहते हैं कि मेरे घर बिटिया ने जन्म नहीं लिया, मेरा आंगन सूना सा है। मैं जब भी बिटिया के ससुराल जाने की रस्म विदाई सुनता हूँ तो हृदय अंदर से हाहाकार करने लगता है। कवि ने अपने अंतस की आवाज को बाहर लाकर प्रस्तुत किया है। कवि की बेटियों के प्रति वात्सल्य वृष्टि साफ झलकती है। आप कहते हैं कि घर की बगिया में जब बेटियां आती हैं तब मानो साक्षात् प्रभु आसमान से आशीष की गंगा बहाते हैं। कवि की कविताओं में क्रांति की तरंगे भी हैं जो मानो शब्दों में ढलकर आम जनता की आवाज बन रही हैं जो कभी दुष्यंत ने गजलों से क्रांति की आवाज उठाई थी। उसी तरह दशरथ ने आम लोगों की जबान में बात की है। राजनीतिक कमियों पर विद्रोह किया है, मानो कलम ने हथियार का रूप ले लिया हो।

पुस्तक : अनुभूति (प्रथम काव्य संग्रह)
लेखक : दशरथ कुमार सोलंकी (नियंत्रक-वित्त, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर)
प्रकाशक का नाम : अरिहंत प्रकाशन, जोधपुर
संस्करण : 2018, **मूल्य :** 200 रूपये

'पूरा लोकतंत्र ही जैसे षड्यंत्र का जाल लगता हैं'

कवि ने कविताओं पर खरा उतरने का काम किया है। कवि ने देश की वर्तमान दशा और दिशा का चित्रण करते हुए जनता की आवाज को सम्बल दिया हैं। एक जनवादी कवि होकर सामने आए हैं जो लोक मंगल की भावना लोगों में भरना चाहते हैं। कवि दशरथ जिनमें प्रेम का उफान हैं जिनमें हृदय को उद्वेलित करने की अद्भुत शक्ति हैं। जिनके दिल से निकली हुई वो सीधी और सरल आवाज हमारे हृदय में घर कर जाती हैं। प्रख्यात कवियत्री पद्मजा शर्मा जी की भूमिका जो जानने-समझने के साथ ही रेखांकित करने योग्य हैं। अनुभूति जीवन की गहन अनुभूतियों का मिलाप करवाती है। कवि का मन कितना सादगी से भरा हुआ हैं आप कहते हैं कि-

ये अहम अकड़ अमीरी सब किसलिए
सरलता सारे जग की दौलत से क्या कम है।

अत: यह कवि दशरथ का प्रथम काव्य संग्रह 'अनुभूति' जो कविताओं का खूबसूरत गुलदस्ता है जिनमें से कविताओं की महक सदियों-सदियों तक आती रहेगी।

जालाराम चौधरी
समीक्षक

'मेरी लॉटरी लग जाने वाली है' राजिंदर नाथ

शिशिर कृष्ण शर्मा
फिल्म इतिहासकार
मो. 9821394486

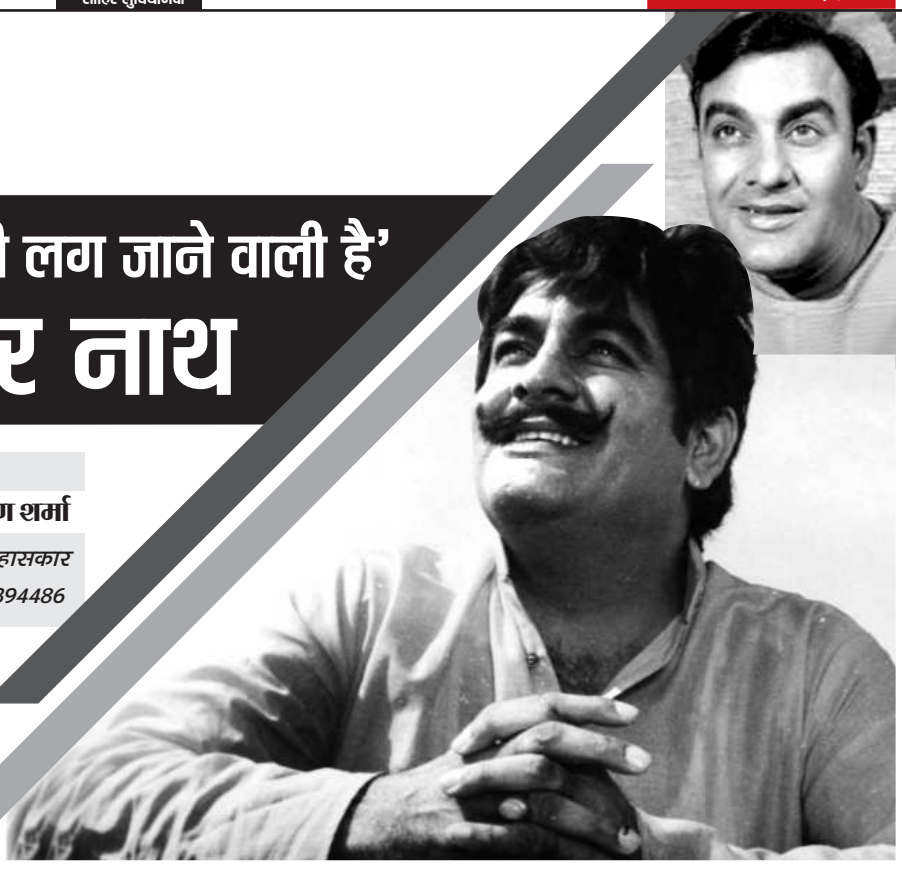

1960 के दशक में महमूद के उदय के साथ ही जॉनी वॉकर समेत उस दौर के सभी जाने-माने हास्य-अभिनेताओं की चमक फीकी पड़ने लगी थी। लेकिन राजिंदर नाथ इसका अपवाद थे, जिनका करियर लगभग महमूद के साथ ही शुरू हुआ और बुलंदियों पर भी पहुंचा था। राजिंदर नाथ के करियर पर महमूद के स्टारडम का कोई असर नहीं पड़ा क्योंकि वो अपनी एक बिल्कुल अलग इमेज बनाने में कामयाब रहे थे।

हिंदी साप्ताहिक 'सहारा समय' के अपने कॉलम 'क्या भूलूं क्या याद करूं' के लिए राजिंदर नाथ जी को तलाशने में मुझे काफी समय लगा। वो कई सालों से 'सिने एंड टी.वी. आर्टिस्ट एसोसिएशन' (सिंटा) के सम्पर्क में नहीं थे। 'सिंटा' के रेकॉर्ड में उनका कोलाबा का पता दर्ज था लेकिन वो अब उस पते पर नहीं रहते थे। काफी कोशिशों के बाद पता चला कि राजिंदर नाथ जी के बारे में उनके करीबी दोस्त अभिनेता बीरबल बता सकते हैं। और इस तरह बीरबल जी के ज़रिए मैं राजिंदर नाथ जी तक पहुंचने में कामयाब हुआ। वो अब खार (पश्चिम) के दसवें रास्ते की ऑर्किड व्हाईट बिल्डिंग में रहते थे।

राजिंदरनाथ मल्होत्रा का परिवार मूलत: पेशावर का रहने वाला था। उनके पिता अंग्रेजों के जमाने में पुलिस विभाग में उच्चाधिकारी थे और नौकरी के सिलसिले में उनका ज्यादातर समय भारत की विभिन्न रियासतों में गुजरता था। राजिंदर नाथ मल्होत्रा का जन्म 8 जून 1931 को मध्य प्रांत (अब मध्य प्रदेश) के टीकमगढ़ कस्बे में हुआ था। उन्होंने अपनी स्कूली पढ़ाई रीवा में की थी। कांग्रेसी नेता अर्जुन सिंह राजिंदर नाथ के सहपाठी और करीबी दोस्त थे। पृथ्वीराज कपूर से मल्होत्रा परिवार की करीबी रिश्तेदारी थी जो राजिंदर नाथ की बड़ी बहन कृष्णा और राज कपूर की शादी से और भी मजबूत हो गयी थी। राजिंदर नाथ की छोटी बहन उमा अभिनेता प्रेम चोपड़ा की पत्नी हैं।

राजिंदर नाथ ने बताया था, 'मेरे बड़े भाई प्रेमनाथ जी भी मुंबई में ही रहते थे और फिल्मों में काम करते थे। मेरी स्कूली पढ़ाई खत्म हुई तो प्रेमनाथ जी ने मुझे भी मुंबई बुला लिया। मैं साल 1947 में मुंबई आया और पृथ्वीराज कपूर की नाटक कम्पनी 'पृथ्वी थिएटर' में शामिल हो गया। मैंने 'पृथ्वी थिएटर' के नाटकों 'दीवार', 'पठान', 'शकुंतला' और 'आहुति' में अभिनय किया। 'पृथ्वी थिएटर' से मेरा जुड़ाव करीब 10 सालों तक रहा। शम्मी कपूर, शशि कपूर, सज्जन, शंकर और जयकिशन 'पृथ्वी थिएटर' में मेरे करीबी दोस्त थे'।

राजिंदर नाथ के मुताबिक वो नाटकों के साथ-साथ फिल्मों में भी

छोटे-मोटे रोल कर लेते थे। लेकिन वो रोल इतने छोटे होते थे कि राजिंदर नाथ परदे पर कब आए और कब गए, पता ही नहीं चलता था। वैसे भी बड़े भाई की सरपरस्ती में दिन बेफिक्री से गुजर रहे थे। करियर को लेकर वो जरा भी गम्भीर नहीं थे। लेकिन उनकी इस लापरवाही से प्रेमनाथ उनसे नाराज रहने लगे थे। और एक रोज प्रेमनाथ ने गुस्से में आकर राजिंदर नाथ को घर से निकाल दिया।

राजिंदर नाथ के मुताबिक, 'ये मेरे लिए बहुत बड़ा झटका था। हालांकि भाई साहब ने रहने के लिए मुझे अपना ही एक और मकान मुझे दे दिया था लेकिन बाकी की बुनियादी जरूरतें पूरी करना भी एक बड़ी समस्या थी। आज के जाने-माने निर्माता यश जौहर भी मेरे साथ उसी मकान में रहकर संघर्ष कर रहे थे। हम दोनों ही बड़ा आदमी बनने के सपने देखते थे। मेरे पास एक पुराना स्कूटर था जिसमें पेट्रोल भराने के लिए भी अक्सर हमारे पास पैसे नहीं होते थे। खाने का इंतजाम भी जान-पहचान वालों के घरों में हो जाता था। लेकिन ऐसा कितने दिन चलता। मजबूरन मुझे करियर के प्रति गंभीर होना ही पड़ा। आज महसूस करता हूं कि प्रेमनाथ जी ने जो भी किया, मेरे भले के लिए ही किया'।

राजिंदर नाथ को पहली बार जिस फ़िल्म में ठीक-ठाक सा रोल मिला था

वो थी साल 1953 में बनी 'शगूफा'। इस फिल्म का निर्माण प्रेमनाथ ने अपने बैनर 'पी.एन.फिल्म्स' में किया था। साल 1954 में प्रेमनाथ ने फिल्म 'गोलकुण्डा का कैदी' का निर्माण किया जिसमें राजिंदर नाथ सहनायक थे। लेकिन ये दोनों ही फिल्में असफल रहीं। साल 1956 में बनी फिल्म 'हम सब चोर हैं' की छोटी सी हास्य भूमिका ने राजिंदर नाथ को पहचान दी। साल 1959 में बनी फिल्म 'शरारत' ने उस पहचान को मजबूत किया और उसी साल बनी 'दिल देके देखो' की कामयाबी ने उन्हें स्टार हास्य कलाकार बना दिया। फिल्म 'दिल देके देखो' के बाद उन्हें पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ा। साल 1961 में बनी फिल्म 'जब प्यार किसी से होता है' की उनकी हास्य भूमिका ने उन्हें घर-घर में 'पोपट लाल' के रूप में मशहूर कर दिया था।

अगले करीब 12 सालों तक राजिंदर नाथ का करियर बुलंदियों पर रहा। उस दौरान उन्होंने तमाम बड़े निर्माता-निर्देशकों के साथ काम किया और 'उसने कहा था', 'प्रेम पत्र', 'मुझे जीने दो', 'तेरे घर के सामने' 'ये रास्ते हैं प्यार के', 'मेरे सनम', 'आए दिन बहार के', 'हरे कांच की चूड़ियां', 'एन ईवनिंग इन पेरिस', 'आया सावन झूम के', 'प्रिंस', 'आन मिलो सजना', 'आप आए बहार आयी', 'धड़कन', 'मेला', 'एक बार मुस्कुरा दो' जैसी कई हिट फिल्मों में नजर आए। लेकिन साल 1969 में एक कार दुर्घटना में गंभीर रूप से जख्मी हो जाने की वजह से राजिंदर नाथ को कई महिने अस्पताल में गुजारने पड़े जिसका उनके करियर पर बुरा असर पड़ा। ऐसे में राजिंदर नाथ ने निर्माता बनने का फैसला किया।

राजिंदर नाथ के मुताबिक, 'साल 1974 में मैंने रणधीर कपूर और नीतू सिंह को फिल्म 'द गेट क्रैशर' की शूटिंग शुरू की। न तो मुझे फिल्म निर्माण का तजुर्बा था और न ही इतने बरस फिल्मी दुनिया में गुजारने के बावजूद मैं यहां के तौर-तरीके ही सीख पाया था। शूटिंग के दौरान जिसने जितना मांगा, भरोसा करके खुले हाथ उतना पैसा लुटाता चला गया। नतीजतन

दस दिनों की शूटिंग के बाद फिल्म बंद हो गयी। मैं भारी कर्ज के नीचे दब चुका था। एक बार फिर से संघर्ष शुरू हुआ। छोटे-बड़े जैसे भी रोल मिले किए ताकि कर्जा चुका सकूं। दिल्ली और यू.पी. के डिस्ट्रीब्यूटरों ने मुझे खून के आंसू रोने पर मजबूर कर दिया। मेरे हालात का पता होते हुए भी उन्होंने अपना एक-एक पैसा भारी ब्याज के साथ वसूल किया'।

राजिंदर नाथ को याद करते हुए उनके करीबी दोस्त अभिनेता बीरबल कहते हैं, 'वो बहुत शरीफ और ईमानदार शख्स था। उसके सीधेपन का हर किसी ने फायदा उठाया लेकिन उसने कभी किसी का दिल नहीं दुखाया। तमाम तकलीफें उठाकर उसने लोगों का एक-एक पैसा चुकता किया'। फिल्म 'द गेट क्रैशर' के निर्देशक का नाम पूछने पर बीरबल बताते हैं, 'जहां तक मुझे याद है, वो फिल्म शायद सिकंदर खन्ना डायरेक्ट कर रहे थे'।

राजिंदरनाथ पारसी समुदाय और दक्षिण भारत के निर्माताओं की ईमानदारी और सद्व्यवहार से बेहद प्रभावित थे। उनका कहना था कि मुंबई के निर्माताओं के विपरीत पारसी और दक्षिण के निर्माता कलाकारों को पूरा सम्मान और बिना मांगे समय पर उसका मेहनताना देते हैं।

सूरत (गुजरात) निवासी वरिष्ठ फिल्म इतिहासकार श्री हरीश रघुवंशी द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के मुताबिक राजिंदर नाथ ने 1950 के दशक में 9, 1960 के दशक में 70, 1970 के दशक में 67, 1980 के दशक में 84 और 1990 के दशक में 23 अर्थात् कुल मिलाकर 253 फिल्मों में अभिनय किया। उनकी आखिरी फिल्म 'लाश' साल 1998 में प्रदर्शित हुई थी। इसके अलावा वो धारावाहिक 'हम पांच' की कुछ शुरूआती कड़ियों में भी नजर आए थे। पुराने दिनों को याद करते हुए राजिंदर नाथ की आंखें चमक उठी थीं। उन्होंने कहा था, 'कश्मीर में मैंने बहुत शूटिंग की। 1960 के दशक में मेरी ज्यादातर फिल्मों की शूटिंग कश्मीर में होती थी। उस जमाने में मुंबई अपने घर तो मैं दो-चार दिनों के लिए किसी मेहमान की तरह आ पाता था'।

राजिंदर नाथ के परिवार में पत्नी के अलावा एक बेटा और एक बेटी हैं। जब हमारी मुलाकात हुई थी, उन्हें फिल्मों से अलग हुए करीब 6 साल हो चुके थे। उन दिनों उनका बेटा कतर एयरलाईंस में नौकरी कर रहा था और बेटी ने अपनी पढ़ाई पूरी की ही थी। बड़े भाई प्रेमनाथ और छोटे भाई खलनायक नरेन्द्रनाथ के निधन ने राजिंदर नाथ के दिलो-दिमाग और सेहत पर गहरा असर डाला था। उनकी खामोशी और उदास चेहरे को देखकर लगता ही नहीं था कि ये वो ही राजिंदर नाथ हैं जिनके परदे पर आते ही किसी जमाने में पूरा हॉल ठहाकों से गूंज उठता था।

राजिंदर नाथ का निधन मुंबई में 13 फरवरी 2008 को हुआ।

लघुकथा

मदर्स डे

मेरे प्रश्न को सुनकर गार्ड ने मुस्कराते हुये कहा- सर, आज मदर्स-डे है, आज साहब, अपनी माँ को हर वर्ष वृद्धाश्रम से लाते हैं और इस प्रकार का कार्यक्रम करके सुबह अपनी माँ को वृद्धाश्रम छोड़ आते हैं ।

मि.आर.के. साहब के विशाल बंगले पर आज कुछ अजीब सी चहल-पहल थी शहर मौहल्ले की अधिकांश वृद्धाएं कुछ खांसती-खंखारती, कुछ लाठी टेकती, कुछ प्रसन्न मन, कुछ बुझी-2, धीरे-2 बतियाती हुई प्रवेश कर रही थी। यूँ तो मि.आर.के. साहब के यहाँ लोगों का आना-जाना लगा ही रहता है। आज मुझे भी किसी काम से उनके यहाँ जाना हुआ। बंगला दूधिया रोशनी से नहाया हुआ था विशाल कक्ष में एक अनमनी, बुझी-बुझी सी वृद्धा सोफे पर बैठी हुई थी। आगन्तुक महिलाएं गले मिल रही थी टेबिल से माला ले कर पहना रही थी। ठीक पास में सोफे पर मि.और मिसेज आर.के बैठे हुये थे। मेरे माजरा कुछ समझ नहीं आ रहा था तब ही गार्ड ने आकर मुझे टोका- सर कैसे खड़े हो ? आज साहब से आपका मिलना नहीं होगा, कल आइयेगा। ठीक है, मैंने कहा। पर आज ये क्या कायक्रम है? मेरे प्रश्न को सुनकर गार्ड ने मुस्कराते हुये कहा- सर, आज मदर्स-डे है, आज साहब, अपनी माँ को हर वर्ष वृद्धाश्रम से लाते हैं और इस प्रकार का कार्यक्रम करके सुबह अपनी माँ को वृद्धाश्रम छोड़ आते हैं ।

गार्ड की बात सुनकर मैं सन्न रह गया मेरे पैर ना खड़े रह पा रहे थे ना ही मुड़कर चल पा रहे थे मैंने दूर से ही उस माँ को प्रणाम किया और घर वापस आकर अपनी माँ के चरणों में बैठकर, फफक-फफक कर रोने लगा। मेरी माँ ने कहा-क्या हुआ बेटा, तेरी तबियत तो ठीक है ना! और मुझे मेरी वृद्धा माँ ने अपने आँचल में छुपा लिया। आज मेरा दो कमरे का छोटा सा मकान उन मि.आर.के. साहब के बंगले से बड़ा दिखाई दे रहा था।

व्यग्र पाण्डे
गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर (राज.)

हवामहल

हाल ही संपन्न हुए लोकसभा चुनाव में जनता ने मोदी सरकार को स्पष्ट जनादेश दिया है, अब सरकार की जिम्मेदारी बनती है कि देश की समस्याओं का निराकरण कर युवाओं को बेहतर भविष्य प्रदान करे। स्पष्ट जनादेश का मतलब यही है कि जनता को अब ज्यादा उम्मीदें हैं और ये उम्मीदें टूटने न पाएं,

उम्मीदें जब टूटती हैं तो बहुत कुछ टूटता है। अभी देश की राजनीति और राज्य की राजनीति में बहुत परिवर्तन होने बाकी हैं और धीरे-धीरे हो भी रहे हैं। राजस्थान सरकार की बात करें तो सरकार ने राजस्थान हाईकोर्ट में अपना शपथ पत्र भेज यह स्वीकार किया है कि प्रदेश में पिछले कुछ समय में बलात्कार के मामलों में बढ़ोत्तरी हुई है, राजस्थान सरकार ने अपने बचाव में तर्क दिया है कि राजस्थान में बलात्कार के मामलों की दर विकसित देशों के मुकाबले बहुत कम है, स्वीडन जैसे देश में यह दर 56.5 प्रति लाख है जबकि राजस्थान में यह दर 10.4 है, सरकार ने अपनी सफाई में यहां तक कह दिया कि बलात्कार के मामलों में देश में राजस्थान राज्य 12वें स्थान पर है। राजस्थान सरकार के मुखिया होने के नाते मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की जिम्मेदारी बनती है। इस तरह के तर्क ठीक नहीं हैं, आप सरकार में हैं, सरकार अगर करना चाहे तो क्या नहीं कर सकती, यूं पल्ला मत झाड़िए साहब, बलात्कार की पीड़ा या तो पीड़ित जानता है या परिवार। आपने यह दलील देकर दर्द और बढ़ाया, उम्मीद है अब अपराधों पर लगाम लगेगी...। बंजारे का कहना मानिएगा जरूर...

बंजारा

दिल्ली दरबार

...जुगाडू लाल बतौर केन्द्रीय मंत्री कक्ष के संतरी रिटायर हुए। चपरासी के तौर पर उन्होंने उस कक्ष में थोक के भाव आये गए बेशुमार लघु और दीर्घकालीन मंत्रियों की सेवा की - संबंध बनाये , किन्तु मोह केवल कक्ष पर टिकाये रखा। इसीलिए मंत्री तो आते जाते रहे किन्तु कक्ष और वो वहीँ स्थापित रहे। आज रिटायरमेंट के दो साल बाद उनसे सुखी व्यक्ति पूरे भारत में नहीं है। भरा पूरा घर बार है। तीन लड़के हैं...छोटा भारतीय पुलिस सेवा में है..अपने ही जिले में तैनाती है...चलो सब कुछ सम्भला रहता है ..,मंझला वाला पढ़ाकू प्राणी निकला सो भारतीय प्रसाशनिक सेवा में डाल दिया...पैतृक जिले में डी.एम. है,...चलो खेतीबाड़ी भी सम्भली रहती है...और..बडकू कुछ क्या बहुत दबंग तबियत का है ...नौकरी रहते में ही उसका प्रबंध कर दिया था ...ससुरा संसद लायक था अपने ही क्षेत्र से अनापोज़ जिता कर वहीँ भेज दिया, ऊपरवाले और ऊपरवालों ने चाहा तो इस बार की उठा पटक में मंत्री बना ही...!! और जुगाडूलाल ...सारा जीवन मेहनत का खाया है..अब भी मेहनत का खाकर खुश हैं ....बिल्डिंगें बनाते हैं...नामी बिल्डर हैं और एक वित्तीय कम्पनी के चेअरमैन और एम.डी . हैं...!!....सब बड़े लड़के के सदके...बाकी दोनों भी पिता और परिवार भक्त !!...आपसी सहयोगों से फलता फूलता परिवार...!!

अब समझ बात आई कि बजुर्ग क्यों जोर देते हैं कि सरकारी नौकरी में जाओ ..चाहे चपरासी ही सही ...सुखी रहोगे..!!

रमन सैनी
गाजियाबाद

अगस्त अंक
'सेना विशेषांक'

अगर आप सेना में कार्यरत हैं या आप सेना से सेवानिवृत्त। आप हमें अपने अनुभव, कविता, कहानी, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत आदि लिखकर भेज सकते हैं।

मोबाइलः 9887409303
email : mahisandesh31@gmail.com

अंतिम तिथि :
10 जुलाई, 2019

क्रमशः पृष्ठ 2 से

मामा स्व. रघु सिन्हा व बहिन स्व. माला माथुर का जीवन है प्रेरणा

सुधीर माथुर ने बताया कि मामा स्व. रघु सिन्हा के पदचिन्हों पर चलने की कोशिश आज भी कर रहा हूं, इनके जीवन मूल्य इनके साथ गुजारा हर लम्हा आज भी जीवंत है, मामा कहते थे कि अगर आपका दायां हाथ समाज सेवा कर रहा है तो बायें हाथ को भी पता न चले, इस तरह के व्यक्तित्व थे जिनके जीवन की स्वयं राजमाता गायत्री देवी भी तारीफ करती थीं, कई बार राजमाता गायत्री देवी ने भी असहाय जरूरतमंद लोगों को भी अपना पत्र देकर भेजा कि इनकी सहायता करें। बहिन स्व. माला माथुर का राजस्थान में एविएशन इंडस्ट्री को ऊपर ले जाने में अहम योगदान है, छोटी दूरी की फ्लाइट को आगे बढ़ाने में काफी काम किया जिसकी वजह से कंपनी ने कई बार बहिन माला के काम को सराहा। माला का भी समाज सेवा और जरूरत मंद लोगों को आगे बढ़ाने का जज्बा था। 05 मई 2005 को काल की क्रूर नियति ने मामा स्व. रघु सिन्हा व इसके बाद कैंसर के कारण बहिन माला को 23 नवंबर 2005 को मुझसे छीन लिया।

रघु सिन्हा माला माथुर चैरिटी ट्रस्ट

सुधीर माथुर ने आगे बताया कि रघु सिन्हा माला माथुर चैरिटी ट्रस्ट का का आरंभ वर्ष 2007 में किया गया, इस ट्रस्ट में कुल 6 व्यक्ति ट्रस्टी हैं। इस ट्रस्ट के जरिए हम समाज सेवा के कई काम कर रहे हैं, हमारा मकसद यही है कि हम उन जरूरतमंद लोगों तक पहुंचें जिन्हें वाकई में मदद की जरूरत है, अगर हम ऐसे इंसान की मदद कर रहे हैं और यदि वो हमारी मदद से जीवन में सफलता की ओर बढ़े तो इससे बड़ी खुशी की बात हो ही नहीं सकती। इस ट्रस्ट के जरिए हम स्कॉलरशिप भी प्रदान करते हैं तथा राजस्थान के आर्ट एंड कल्चर को भी प्रमोट करने का काम कर रहे हैं। अभी हमने उमंग बिल्डिंग

समाज सेवी के साथ-साथ प्रकृति प्रेमी भी हैं सुधीर

सुधीर माथुर न केवल समाज सेवा बल्कि पर्यावरण के प्रति भी जागरूक हैं और अन्य लोगों को भी जागरूक करते रहते हैं, इसके साथ-साथ समय निकालकर बागवानी भी करते हैं, अपने घर के बाहर भी सड़क के पास सरकारी क्षेत्र को भी इन्होंने पेड़-पौधे व घास लगाकर सुंदर बना रखा है।

के दो फ्लोर बनवाए हैं ताकि इस सेवा कार्य को सुचारू रूप से आगे बढ़ाया जाए। इसके साथ हमने कश्मीर के तनमर्ग क्षेत्र में 'राहत घर' नाम से एक घर का निर्माण किया है जिसमें अनाथ बच्चियों के रहने का प्रबंध किया जा रहा है। भविष्य में हम कुछ बड़े प्रोजेक्ट भी लेकर आ रहे हैं जिसके तहत स्व. रघु सिन्हा- स्व. माला माथुर के नाम से स्कूल एजुकेशन आरंभ करने की योजना है, इस छोटी सी जिंदगी में कई काम करने हैं, बस धीरे-धीरे इस तरफ बढ़ रहे हैं।

जीवन में सहजता है पसंद

सुधीर पुराने फिल्मी गीत सुनने के बेहद शौकीन हैं, इसके अलावा अपनी व्यस्त दिनचर्या में से समय निकालकर इन्हें पुस्तक पढ़ना, कवि सम्मेलन सुनना बड़ा अच्छा लगता है। इनका व्यक्तिगत पुस्तकालय भी है जिसमें काफी संख्या में नई व पुरानी पुस्तकों का संकलन है। पोलो मैच देखना व ट्रेवलिंग, बागवानी करना इन्हें अच्छा लगता है। खास बात यह है कि अपने मृदुभाषी व्यक्तित्व से इन्हें हर पीढ़ी बेहद पसंद करती है।

समाज को समर्पित है जीवन

समाज सेवी सुधीर माथुर कहते हैं कि हमें जो भी मिलता है इस समाज के माध्यम से मिलता है, जब उचित समय आए तो समाज का भला करने के लिए हमें हमेशा तत्पर रहना चाहिए। कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता समय पर की गई किसी के लिए छोटी सी मदद भी दिल को बड़ा सुकून देती है। सुधीर आगे कहते हैं कि मेरा यह संपूर्ण जीवन समाज के लिए समर्पित है, ईश्वर ने मुझे सक्षम बनाया है और जब तक मैं हूं तब तक इन कार्यों को पूरी जिम्मेदारी और ईमानदारी के साथ लगनपूर्वक निभाऊंगा, जब हम बचपन में होते हैं तो सीखते हैं जब युवा बनते हैं तो कमाते हैं और तीसरा दौर आता है रिटर्न करने का जो मिला है उसे आप समाज को किस रूप में देते हैं, मैं समाज सेवा के जरिए समाज के लिए योगदान कर रहा हूं और आजीवन करता रहूंगा।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/450/2018-20
समाचार पत्र की पंजीयन संख्या : RAJHIN/2018/75539

प्रकाशन की तिथिः माह की 1 तारीख
प्रेषण दिनांक : हर माह की 5 तारीख, सी.एस.ओ. गांधीनगर, जयपुर

तस्वीर बोल उठी–15

तस्वीर : वीनू मित्तल

इस तस्वीर को देखकर आपके मन में जो भाव उमड़ रहे हैं बस उन भावों को काव्य भाषा की चार पंक्तियों में लिख डालिए। सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को माही संदेश के अगले अंक (अंतिम तिथि 20 जून) में प्रकाशित किया जाएगा–

तस्वीर बोल उठी–14

रचना भेजने का पता

संपादक माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर- 302021 (राजस्थान)।
email-mahisandesh31@gmail.com

तस्वीर बोल उठी–14 के अन्तर्गत काफी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुई सर्वश्रेष्ठ रचना को यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

सियासत की इस आंधी में खुद को थाम लेना तुम
तुम्हारे काम के बदले हमसे इक पैगाम लेना तुम
नफरत की नज़र से देखने वालों जरा सुन लो
मेरी वोट की ताकत को अब पहचान लेना तुम

सोनू श्रीवास्तव
सिवान (बिहार)

जयपुर में प्लॉट
रिंग रोड़ पर
JDA
अप्रूव्ड
RAJ-RERA
Registered
Rs. 3,50,000/-
डाउन पेमेंट पर प्लॉट
90%
तक बैंक लोन उपलब्ध
Mob.:
7742917602

पल-पल मिलकर दिन बने, दिन-महीनों से साल
मां-पापा को बहुत मुबारक, शादी की 35वीं साल

श्री बालकृष्ण
श्रीमती दयावती

विवाह वर्षगांठ
11 जून, 2019

शुभकामनाओं सहित

रोहित-माला
कपिल-रूबी
दीपक, माही, लवी

अपने घर पर हर माह प्राप्त करें देश की लोकप्रिय
मासिक पत्रिका माही संदेश अपनी प्रति मंगवाने के लिए
हमें कॉल करें या पता व्हाट्सएप/मैसेज पर संपर्क करें...

सम्पर्क : संपादक, माही संदेश,
मो. 9887409303, 7597288874
email-mahisandesheditor@yahoo.com

प्रेषक :
संपादक (माही संदेश)
50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।
पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें

सेवा में,

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक **रोहित कृष्ण नन्दन** द्वारा कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स, 448, बाक्लीवाल भवन, लाल जी सांड का रास्ता, जयपुर से छपवाकर माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार, कमला नेहरू नगर, अजमेर रोड, जयपुर-302021 से प्रकाशित किया। **मो. 9887409303**